bjpkamaljyoti@gmail.com संवत 2076 युगाब्द 5120 मूल्य : ₹10 अंक – 15, मार्च प्रथम अंक 2021, कुल पृष्ठ – 32

वर्तमान

कमल ज्योति

विकास गाथा

प्रयागराज एवं वाराणसी के नव निर्मित कार्यालयों का उद्घाटन

वर्तमान

कमल ज्योति

संरक्षक

श्री स्वतंत्र देव सिंह

सम्पादक

अरुण कान्त त्रिपाठी

प्रबन्ध सम्पादक

राजकुमार

प्रकाशक

प्रो0 श्याम नन्दन सिंह

पृष्ठ संयोजक

ओम प्रकाश पंडित

कार्यालय

कमल ज्योति, 7–विधानसभा मार्ग

लखनऊ – 1

फोन :– 0522–2200187

फैक्स :– 0522–2612437

Email-
bjpkamaljyoti@gmail.com

पत्रिका में प्रकाशित आलेखों से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं

मुद्रक

नूतन ऑफसेट मुद्रण केन्द्र,
राजेन्द्र नगर, लखनऊ–4

भाजपा उत्तर प्रदेश की प्रदेश कार्यसमिति बैठक दिनांक 15 मार्च 2021 को लखनऊ में।

संपादकीय

विजयपथ-विजयपथ-विजयपथ.....!

चार बरस बीत गये। इन चार बरसों में प्रदेश के हर कोने में हर दिन कुछ नया होता रहा। 19 मार्च 2017 को भाजपा सरकार के मुखिया के तौर पर प्रदेश की विकास यात्रा की कमान संभालने वाले मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ फुल एक्शन में हैं। व्यवस्था को सुधारने की हर कोशिश में जुटे हैं। हर किसी से वो जवाब–तलब करते हैं। सूबे के पर्यावरण को सुधारने के लिये 25 करोड़ वृक्ष लगाने का संकल्प लेते है। 2014 के बाद लगातार विधानसभा, निकायों और उपचुनावों में जिस तरह जनता ने भाजपा पर भरोसा जताया है, आज चार बरस से मुख्यमंत्री स्वयं उस जनता का दुख दर्द जानने पहुंच रहे हैं। योगी आदित्यनाथ जनता की वह परेशानी दूर करने में लगे हैं जो पिछली सरकारों के कार्यकाल में सहमी थी। उसका भाजपा सरकार पर भरोसा जगा है। वह भरोसा सरकार के फैसलों में झलकता है.....! इन पंक्तियों से उसका तारतम्य झलकता है।.......

टूटे हुए तारों से फूटे बासंती स्वर। पत्थर की छाती में उग आया नव अंकुर। झरे सब पीले पात कोयल की कुहुक रात। प्राची में अरुणिम की रेख देख पता हूं..... ।।

ऐसे में19 मार्च को जब सरकार के कार्यकाल के चार वर्ष पूरे हो रहे होंगे तब प्रदेश की सरकार चार लाख युवाओं को सरकारी नौकरी दे चुकी होगी। इन शब्दों को लिखे जाने तक सरकार प्रदेश के 3.87 लाख युवाओं को नौकरी दे चुकी थी।

भाजपा की सरकार आने के बाद नौकरियों की चयन प्रक्रिया बहुत पारदर्शी रही है। भर्तियों की प्रक्रिया पर कोई उंगली नहीं उठी। कहां पेपर बन रहा है। कितने सेट बन रहे हैं। सेंटर कहां बन रहा है। कोई नहीं जानता था। जहां भी जानकारी लीक होती वहां कठोरतम कार्रवाई की गई। निजी क्षेत्र में भी सरकार ने बहुत ने संभावनाएं तलाशी।15 लाख लोगों को निजी क्षेत्रों में प्रत्यक्ष रोजगार मिला और डेढ़ करोड़ को रोजगार से जोड़ा गया है। यह किसी भी सरकार के इठलाने के लिये पर्याप्त है।

देश के धान और गेहूं किसानों को सबसे अधिक भुगतान देने वाली उत्तर प्रदेश सरकार रही है। पिछले चार वर्षों में धान किसानों को 31904 करोड़ रुपये डीबीटी से मिले हैं। यह भुगतान एक रिकार्ड है। पिछले चार साल में गेहूं के 33 लाख किसानों को 29017 करोड़ का भुगतान हुआ है। किसानों से सीधे खरीद होने और ई–उपार्जन पोर्टल से किसानों को भुगतान करने की गाथा लिखी जा चुकी है।

2019 में भी सरकार का आगाज बेहद शानदार रहा। 15 जनवरी 2019 से शुरू हुए कुंभ में विश्व के इस महानतम सांस्कृतिक समागम में देश–दुनिया के 25 करोड़ से अधिक श्रद्धालुओं एवं पर्यटकों ने संगम में डुबकी लगाई। यह आयोजन स्वच्छता एवं सुरक्षा के सभी मानकों पर खरा उतरा। 72 देशों के राजदूतों एवं संयुक्त राष्ट्र संघ के 187 देशों के प्रतिनिधियों ने 'दिव्य एवं भव्य कुम्भ' का अवलोकन किया। पहली बार इतने बड़े पैमाने पर काशी में प्रवासी भारतीयों का सम्मेलन हुआ।

अयोध्या के दीपोत्सव, वृंदावन के रंगोत्सव, मथुरा के कृष्ण जन्मोत्सव और काशी के देव दीपावली की भव्यता को भी पूरी दुनिया ने सराहा। वर्षों पुराने पर हमारे राम मंदिर पर आए फैसले के बाद की शांति ने सारी आशंकाओं को निर्मूल कर दिया।

पूर्वांचल के मासूमों के लिए चार दशकों से काल बनी इंसेफेलाइटिस पर सरकार ने जिस तरह काबू पाया उसकी भी पूरी दुनिया में तारीफ हुई। आम आदमी को सस्ती और बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं मिले इसके लिए सरकार लगातार प्रयास करती रही। यह सिलसिला जारी रहा तो आने वाले समय में प्रदेश के स्वास्थ्य क्षेत्र की तस्वीर बदल जाएगी।

चार दशकों से लटकी हुई कई सिंचाई परियोजनाएं योगी सरकार में पूरी होने जा रही हैं। इसमें बाणसागर परियोजना पूरी हो गई है, जबकि अर्जुन सहायक परियोजना, सरयू नहर परियोजना इसी वित्तीय वर्ष में पूर्ण होंगी।

जिससे 20 लाख हेक्टेयर अतिरिक्त भूमि सिंचित होंगी। नहरों का पानी टेल तक पहुंचे, इसके लिए 45,000 किमी नहरों की सफाई करवाई जा चुकी है।

लोकतंत्र का कुंभ, लोकसभा चुनाव भी सकुशल संपन्न हुआ। उसके बाद उपचुनाव में भी सफलता का कीर्तिमान स्थापित किया गया। निवेश के मोर्चे पर भी दूसरे ग्राउंड ब्रेकिंग सरमनी का भी सफल आयोजन हुआ। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की 150वीं जयंती पर 36 घंटे के रिकार्ड समय तक विधानसभा चली। अपराध और भ्रष्टाचार के प्रति सरकार की जीरो टालरेंस की नीति रही। अपराधी या जेल चले गये या प्रदेश से बाहर गए। भ्रष्ट अफसर भी लगातार सरकार के रडार पर रहे। आजम खां जैसे नेता परिवार सहित जेलयात्रा पर हैं। लव जिहाद कानून धोखे से शादी करने पर अकुंश लगा रहा है।

यूपी में पिछले चार वर्षों के दौरान सकारात्मक माहौल बना है। पिछली सरकारों में अपराध और दंगे चरम पर थे। निवेशक उत्तर प्रदेश आने से डरते थे। यूपी अब एक्सपोर्ट का हब बन रहा है। ये नए भारत का उत्तर प्रदेश है। कोरोना काल में हम लोगों ने करोड़ों लोगों को रोजगार देने का काम किया। जो मजदूर यूपी लौटा था वह वापस नहीं गया। पिछली सरकार ने यूपी को पीछे धकेला था। अब राज्य देश में तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था बन रहा है।

किसानों को लेकर सरकार पूरी संवेदनशील है। किसानों की आय को साल 2022 तक दोगुना करने का लक्ष्य है। मुख्यमंत्री कृषक दुर्घटना कल्याण योजना के अन्तर्गत 600 करोड़ रुपये की व्यवस्था हुई है, जिसमें सरकार किसान का 5 लाख का बीमा करायेगी। किसानों को मुफ्त पानी की सुविधा रियायती दरों पर किसानों को फसली ऋण देने हेतु 400 करोड़ रुपये व्यय हो रहे है। एक फीसदी ब्याज दर पर किसानों को कर्ज मिलेगा। प्रधानमंत्री किसान ऊर्जा सुरक्षा एवं उत्थान महाभियान के अन्तर्गत 15 हजार सोलर पम्पों की स्थापना होगी। गन्ना किसानों को चार साल में सभी सरकारों से ज्यादा भुगतान किए गए हैं।

अब सरकार पंचायत चुनाव को सफलता के साथ पूरा करने जा रही है। पंचायती राज के लिए करीब 712 करोड़ रुपये खर्च करके प्रत्येक न्याय पंचायत में चंद्रशेखर आजाद ग्रामीण विकास सचिवालय की स्थापना होगी। उत्कृष्टग्राम पंचायतों को प्रोत्साहित किये जाने के साथ ग्राम पंचायतों में बहुउद्देशीय पंचायत भवनों का निर्माण होगा। राष्ट्रीय ग्राम स्वराज अभियान के तहत पंचायतों की क्षमता संवर्धन, प्रशिक्षण एवं पंचायतों में संरचनात्मक ढांचे के निर्माण पर 653 करोड़ रुपये व्यय होंगे। प्रधानमंत्री आवास योजना (ग्रामीण) में 7000 करोड़ रुपये खर्च हो रहे है। राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारण्टी योजना में 35 करोड़ मानव दिवस का रोजगार सृजन का लक्ष्य है। सही मायने में योगी सरकार ने यूपी के गांवों को विकास का केन्द्र बनाने का बड़ा दांव चला है। गाय, गुरुकुल, गोकुल, सब बीजेपी के मिशन विकास का हिस्सा बन गए हैं।

सरकार ने महिला सामर्थ्य योजना को शुरू किया है, जिसके लिए 200 करोड़ रुपए दिए हैं। महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए मिशन शक्ति चल रही है। महिला शक्ति केंद्रों की स्थापना पर 32 करोड़ रुपए व्यय हो रहे हैं। प्रतिभाशाली छात्र–छात्राओं को पढ़ाई के लिए टैबलेट,रोजगार के लिए जिलों में काउंसलिंग सेंटर और तैयारी के लिये अंभ्युदय योजना आरंभ हो चुकी है। तो आइये हम स्वागत करें अपनी सरकार के अंभ्युदय का। नेतृत्व का। संगठन का। कार्यकर्त्ताओं का और कहे....।

सम्मुख फैला अगर ध्येय पथ।
प्रगति चिरंतन कैसा इति अब।
सुस्मित हर्षित कैसा श्रम श्लथ।
असफल, सफल समान मनोरथ।
सब कुछ देकर कुछ न मांगते।
पावस बनकर ढलना होगा...

akatri.t@gmail.com

उत्तर प्रदेश का कायाकल्प

अरुण कान्त त्रिपाठी

यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः।
स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते।।

श्रीमद भागवत गीता में कृष्ण कहते हैं कि, हे! पार्थ...श्रेष्ठ पुरुष को सदैव अपने पद और गरिमा के अनुसार ही व्यवहार करना चाहिए, क्योंकि वह जिस प्रकार का व्यवहार करेगा, सामान्य मनुष्य भी उसी को अपना आदर्श मानेंगे।

कहा जाता है कि, यदि घर का आधार कमजोर हो, तो भवन भरभरा कर गिर जाता है लेकिन यदि नींव मजबूत है, तो भवन हिल भी नहीं सकता। ऐसा यूपी में हुआ। पिछले चार वर्षों में सरकार ने न केवल नींव को मजबूत बनाया अपितु भवन को भी मजबूत आधार दे दिया। एक राजनीतिक के तौर पर प्रदेश के मुख्यमंत्री और उनकी टीम ने इसको जिया। चार वर्ष पूर्व प्रदेश की सत्ता पर 2017 में प्रादुर्भाव करने वाले संन्यासी राजनीतिज्ञ ने अपने प्रथम संबोधन में कहा था, उनका कर्तव्य है कि, वह समाज को अच्छा बनाये और दुष्टों को सजा दे। एक सन्यासी के नाते, जो कुछ सच होगा, केवल मैं वही बोलूँगा। इस संन्यासी ने कहा प्रदेश के कार्यपालकों को कम से कम 18 से 20 घंटे काम करना होगा, उसके बाद ही वे नौकरी बचा सकेंगे। उन्होंने कहा, प्रदेश में संभावनाओं और अवसर की कमी नहीं। बस उसे पहचानने की जरूरत है और काम करने की आवश्यकता है। मैं उत्तर प्रदेश का विकास प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी के उस 'स्लोगन' से करुँगा। जो सबका साथ, सबका विकास में निहित है।

2017 में भाजपा की सरकार आने से पूर्व उत्तर प्रदेश पांच प्रमुख समस्याओं से जूझ रहा था। वह समस्याएं थीं....।

- **संगठित अपराध**
- **किसानों का पराभव**
- **चरमराता स्वास्थय**
- **लचर बुनियादी शिक्षा**
- **आर्थिक परावस्था**

19 मार्च 2017 को योगी आदित्यनाथ सरकार ने शपथ लिया। पहले ही दिन किसानों को एकमेव लाभ देते हुए योगी सरकार ने 36000 करोड़ रुपये का किसानों का कर्ज समाप्त कर दिया। इस एक उपलब्धि ने ही सरकार के निर्णयों को नया आयाम दे दिया।

आज जब योगी आदित्यनाथ सरकार चार वर्ष पूरे कर रही हैं। तब प्रदेश के जन–जन में भयमुक्त भाव जाग्रत है। 2017 में 325 सीटों के साथ भाजपा सरकार के मुख्यमंत्री के रूप में योगी आदित्यनाथ ने एक नया अध्याय लिखा था। आज चार वर्ष के बाद राजनीतिक पंडित पूछ रहे हैं...यह क्या हो गया उत्तर प्रदेश में? जवाब मिलता है– चमत्कार।

सबसे ज्यादा हैरान देश का विपक्ष है।

लेकिन, विपक्ष की हैरानगी प्रदेश के आम लोगों को जरा भी दिग्भ्रमित नहीं करती है। 2017 में लोगों ने जब भाजपा पर अपना स्नेह लुटाया तब वे जानते थे कि सरकार उनकी है। यह सरकार उनके दुःख–दर्द का

निवारण करेगी। इन सबकी आंकाक्षाओं को प्रदेश की भाजपा सरकार ने पूरा किया। दूसरे शब्दों में कहें तो मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ उनके दोनों सहयोगी उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य और डा. दिनेश शर्मा ने अपना राजधर्म निभाया। सबका साथ–सबका विश्वास और सबका विकास की संगठित भूमिका पर सरकार ने इतिहास रचा है–रिकार्ड बनाया है।

इसके चार स्पष्ट कारण हैं.....!

- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी
- भाजपा का संगठन
- मुख्यमंत्री का परफार्मेन्स
- सरकार की पालिसी

इनको भी तीन समूहों में बांट कर देखा जा सकता हैं, ये माध्यम हैं

- केन्द्र की नीतियां, भाजपा, सबका साथ।
- ढांचागत परियोजनाएं, माफियाओं पर सर्जिकल स्ट्राइक, उज्ज्वला स्कीम।
- अमित शाह, सुनील बंसल, भाजपा कार्यकर्ता

इसके अलावा संगठन में 'डू आर डाई' जैसा भाव

सही मायनों में उत्तर प्रदेश को कहा जाये तो यहां पर जाति–धर्म की राजनीति खत्म होने का संदेश मिल रहा है? अब यहां पर मतदाता तीन बातें चाहते हैं।

अ) काम **ब)** कनेक्ट **स)** करिश्मा।

2017 में आने के बाद सरकार ने कई ढांचागत योजनाएं आरंभ कीं। इसके अतिरिक्त उज्ज्वला योजना। इसके तहत दिए गए एलपीजी सिलेंडर ने पिछड़े–तंग इलाकों में गरीब–दलित परिवारों को चूल्हे के धुएं से मुक्ति दी। वैसे तो बताने को योजनाएं सैकड़ों हैं। लेकिन 2017 की नोटबंदी को गरीबों ने अमीरों के खिलाफ मानकर पसंद किया। इसी तरह बाहुबलियों को चुनते रहने वाला उत्तर प्रदेश माफियाओं पर सरकार के शिकंजे को सर्जिकल स्ट्राइक मानकर प्रभावित हुआ। मार्च 2017 से जुलाई 2019 का एक विश्लेषण बताता है कि, हर दिन लगभग छह एनकाउंटर हुए और 14 अपराधियों की गिरफ्तारी की गई। यही नहीं, प्रति माह कम से कम चार अपराधियों का काम तमाम किया गया। योगी सरकार के कार्यकाल में मार्च 2017 से 15 फरवरी 2021 के बीच प्रदेश भर में पुलिसवालों और अपराधियों के बीच 7500 से ज्यादा मुठभेड़ हो चुकी हैं। जिसमें 132 अपराधी मारे जा चुके हैं। 2900 से ज्यादा अपराधी पकड़े गये हैं।

सरकार ने किसानों की आय को साल 2022 तक दोगुना करने का लक्ष्य रखा। मुख्यमंत्री कृषक दुर्घटना कल्याण योजना के अन्तर्गत 600 करोड़ रुपये की व्यवस्था बजट में प्रस्तावित है, जिसमें सरकार किसान का 5 लाख का बीमा कराएगी। योगी सरकार के अंतिम बजट में किसानों को मुफ्त पानी की सुविधा के लिए 700 करोड़ रुपये और रियायती दरों पर किसानों को फसली ऋण उपलब्ध कराए जाने हेतु अनुदान के लिए 400 करोड़ रुपये की व्यवस्था प्रस्तावित है। सरकार ने एक फीसदी ब्याज दर पर किसानों को कर्ज मुहैया कराने का ऐलान भी किया है। वहीं प्रधानमंत्री किसान ऊर्जा सुरक्षा एवं उत्थान महाभियान के अन्तर्गत वित्तीय वर्ष 2021–22 में 15 हजार सोलर पम्पों की स्थापना का लक्ष्य है। इसके अलावा सरकार ने गन्ना किसानों के चार साल में सबे अधिक किए गए भुगतान का भी जिक्र कर यह बताया है कि अब तक की सभी सरकारों से ज्यादा बीजेपी के कार्यकाल में भुगतान किए गए हैं। विधानसभा चुनाव से पूर्व होने जा रहे पंचायत चुनाव के नतीजों से भाजपा अपना संदेश आमलोगों को देने में सफल रहेगी।

पंचायत चुनाव को राजनीतिक पंडित अगले वर्ष होने वाले विधानसभा चुनाव का पूर्वाभ्यास मान रहे हैं। लेकिन वे यह भूल जाते हैं कि पंचायत चुनाव जीतने के साथ पिछले सभी चुनाव भाजपा संगठन और योगी सरकार ने अपने कार्य से जीता है। सरकार के हर काम का अंदाज ग्राम्य विकास है। सरकार ने विकास का मुंह गांवों की तरफ कर रखा है। इसे समझने के लिये इतना काफी है कि पंचायती राज के लिए करीब 712 करोड़ रुपये, प्रत्येक न्याय पंचायत में चंद्रशेखर आजाद ग्रामीण विकास सचिवालय की स्थापना के लिये 10 करोड़ रुपये, इतना ही नहीं, मुख्यमंत्री पंचायत प्रोत्साहन योजना के अन्तर्गत उत्कृष्टग्राम पंचायतों को प्रोत्साहित किये जाने हेतु 25 करोड़ रुपये, ग्राम पंचायतों में बहुउद्देशीय पंचायत भवनों के निर्माण हेतु 20 करोड़ रुपये की व्यवस्था और राष्ट्रीय ग्राम स्वराज अभियान योजना के अंतर्गत पंचायतों की क्षमता संवर्धन, प्रशिक्षण एवं पंचायतों में संरचनात्मक ढांचे के निर्माण हेतु 653 करोड़ रुपये की व्यवस्था है। सरकार ने प्रधानमंत्री

आवास योजना (ग्रामीण) के अन्तर्गत 7000 करोड़ रुपये की व्यवस्था तो मुख्यमंत्री आवास योजना–ग्रामीण के अंतर्गत 369 करोड़ रुपये दिया है। राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारण्टी योजना में 35 करोड़ मानव दिवस का रोजगार सृजन का लक्ष्य है। इस लक्ष्य के लिए 5548 करोड़ रुपये की है। यह सब योगी सरकार ने यूपी के गांवों को विकास का केन्द्र बनाने के लिये किया है।

इस बीमा योजना में केवल खतौनी में दर्ज खाताधारक व सह खातेदार किसान शामिल थे। उनके निर्णय किस तरह से लोगों के हितधारक रहे इसका उदाहरण यह योजना है। पूर्व की योजना में बीमा कंपनियों के जरिए किसानों को सरकार से दिए जा रहे प्रीमियम के बराबर भी मुआवजा नहीं मिल पा रहा था। इस फीडबैक के बाद मुख्यमंत्री ने बीमा की व्यवस्था समाप्त कर नये रूप में ला दिया। इससे किसानों के आश्रितों व बटाईदारों को शामिल कर योजना के दायरे में चार करोड़ से अधिक लाभार्थी आएंगे। सबका साथ–सबका विकास–सबका विश्वास पर आधारित योजना का सर्वाधिक लाभ भूमिहीनों को मिलने वाला है। इनमें सबसे ज्यादा संख्या अनुसूचित जातियों, जनजातियों, अल्पसंख्यकों की है।

चुनाव कोई भी और किसी भी स्तर का हो, भाजपा के तरकश में विकास का तीर रहता है। 2022 के विधानसभा चुनाव में भी बीजेपी इसे धार देगी। सरकार का काम लोगों के सिर चढ़कर बोलेगा। प्रदेश में हिंदू धर्म से जुड़े धार्मिक स्थलों को पर्यटन का सरकार हिस्सा बनाकर सरकार रोजगार के नये अवसर उत्पन्न कर रही है। गाय, गुरुकुल, गोकुल, सब मिशन का हिस्सा हैं। सरकार का अयोध्या और काशी पर फोकस है। प्रदेश में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का फैलाव है।

मिशन सशक्तिकरण

प्रदेश की नारी शक्ति ग्रामीण से शहरी इलाकों तक भाजपा के लिए साइलेंट वोटर का सबसे बड़ा समूह बन गईं हैं। इसलिये योगी सरकार ने लगातार महिला मतदाताओं का खास ध्यान रखा है। सरकार के गठन के बाद एंटी रोमियो स्कवाड बनाकर महिलाओं का विश्वास जीतने की कोशिश की गई थी तो चौथे वर्ष में जब प्रदेश में महिलाओं के साथ अपराध की घटनाएं बढ़ी तों महिलाओं के सम्मान और स्वाभिमान के लिए मिशन शक्ति चलाया गया है।

महिला सामर्थ्य योजना नाम से दूसरा प्लान योगी सरकार ने शुरू किया है, जिसके लिए 200 करोड़ रुपए व्यय किये जा रहे हैं। महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए प्रदेश की सरकार मिशन शक्ति चला रही है, जिसके तहत उनको आत्मसुरक्षा और आत्मनिर्भरता दोनों की ट्रेनिंग दी जाती है। महिला शक्ति केंद्रों की स्थापना के लिए 32 करोड़ रुपए हैं। सरकार ने ऐसी कई घोषणाएं की है जिनका फायदा महिलाओं और छात्राओं को मिलेगा। प्रदेश के प्रतिभाशाली छात्र–छात्राओं को पढ़ाई के लिए टैबलेट देने का वादा है। रोजगार के लिए जनपदों में काउंसलिंग सेंटर बनाने की बात है। सामर्थ्य योजना में महिलाओं को स्किल ट्रेनिंग मिलेगी ताकि वे किसी काम में ट्रेंड हो जायें और रोजगार अवसर बढ़ें।

सरकारी स्कूलों में शिक्षा की गुणवत्ता के लिए कई अहम कदम उठाए गए हैं। बेसिक शिक्षा में स्कूल चलो अभियान के तहत पिछले चार साल में 4 करोड़ 71 लाख से अधिक बच्चों का नामांकन किया गया और पहली बार सरकारी स्कूलों में स्वेटर, जूते और मोजे स्कूल बैंग का वितरण किया गया। प्रदेश में हर बच्चे को बस्ते में सभी पुस्तकें मिलीं। हर बार नकलविहीन बोर्ड परीक्षाएं हुईं। महीनों चलने वाले परीक्षा कार्यक्रम आधे महीनों में हो गये और सर्वप्रथम परीक्षा परिणाम भी मिला गया।

सरकारी स्कूलों में मिड डे मील में होने वाली लापरवाही आए दिन अखबारों की सुर्खियों में रहती थी उनमें आमूलचूल परिवर्तन हो गया। अंग्रेजी माध्यम के प्राइमरी स्कूल बन गए। अध्यापकों की उपस्थिति प्रेरणा ऐप से होने गली जिससे स्कूलों की गुणवत्ता बढ़ी।

उच्च शिक्षा पर फोकस

उच्च शिक्षा का पूरा ढांचा ही सरकार बदल चुकी है। पूरे प्रदेश में विश्वविद्यालयों में आमूलचूल बदलाव की प्रक्रिया आरंभ है। मंशा है कि यूपी को उच्च शिक्षा के बेहतरीन केन्द्र के रूप में स्थापित किया जाए। इस दिशा में समेकित प्रयास किए जा रहे हैं। नई शिक्षा नीति के लागू होने से प्रयासों को विशेष बल मिला। अलीगढ़ सहारनपुर व आजमगढ के राज्य विश्वविद्यालय की स्थापना की प्रक्रिया आरंभ है। स्पोर्टस विश्वविद्यालय, आयुष विश्वविद्यालय तथा विधि विश्वविद्यालय के लिये कार्रवाई हो रही है। सरकार का प्रयास है कि अलग

अलग विश्वविद्यालयों की अपने कार्यों के आधार पर पहचान हो। सरकार ने नई शिक्षा नीति को अमलीजामा पहनाने की दिशा में ठोस कार्ययोजना के तहत आगे बढा जा रहा है। इसके लिए 16 सदस्यीय टास्क फोर्स का गठन किया गया है। उच्च शिक्षा, माध्यमिक शिक्षा, बेसिक शिक्षा तथा तकनीकी शिक्षा विभाग में अलग–अलग स्टीयरिंग कमेटी बनाई गईं हैं। टास्क फोर्स की 6 व स्टीयरिंग कमेटी की 17 बैठकें हो चुकी है। उच्च शिक्षा के क्षेत्र में 17 वर्किंग ग्रुप भी बनाए गए हैं। सुधारों की प्रक्रिया को अल्पकालीन, मध्यकालीन व दीर्घकालीन प्रक्रिया में बांटकर आगे बढा जा रहा है। प्रदेश में एमफिल पाठ्यक्रम को समाप्त कर दिया गया है। पाठ्यक्रमों के पुनर्गठन को तेज करने के साथ ही क्रेडिट की हस्तांतरणीयता, अकादमिक क्रेडिट बैंक, मूल्यांकन की विधि में बदलाव, कौशल विकास व उद्योग के साथ गठजोड जैसे कार्य प्रगति पर है। मीडियम टर्म उद्देश्य में जीईआर को बढाना, समानता व समावेश के तहत विशेष बच्चों के लिए विशेष प्रयास, करियर काउंसिलिंग शोध अनुसंधान व नवाचार की दिशा में कार्य किए जा रहे हैं। दीर्घकाल में चरणबद्ध सम्बद्धता प्रणाली को समाप्त करना, कालेजों को स्वायत्ता प्रदान करने का कार्य केन्द्र सरकार के निर्देशों के अनुरूप हा रहा है। सही अर्थों में सरकार का उद्देश्य समावेशी शिक्षा देने का है। न्यूनतम साझा पाठ्यक्रम के लिए उच्च शिक्षा विभाग व विश्वविद्यालय काम कर रहे हैं। सरकार का मानना है कि करीब 70 प्रतिशत कोर्स एक समान हो तथा शेष 30 प्रतिशत विश्वविद्यालय स्तर पर तैयार हो। इससे विद्यार्थियों को एक विश्वविद्यालय से दूसरे विश्वविद्यालय में प्रवेश लेने में सुविधा होगी। यह नीति शिक्षा के क्षेत्र में आमूलचूल बदलाव लेकर आएगी। हर विश्वविद्यालय व महाविद्यालय में महिला सशक्तीकरण प्रकोष्ठ के साथ ही कौशल विकास व औद्योगिक प्रकोष्ठ बन रहे हैं। वर्ष 2021–22 के लिए उच्च शिक्षा विभाग ने जो लक्ष्य तय किए हैं उनमें परास्नातक स्तर पर नई संरचना को लागू करना, इन्क्यूवेशन व इनोवेशन हब बनाना, ई लर्निंग पार्क व ई सुविधा केन्द्र बनाना शामिल हैं। प्रदेश में एक ऐसा पायलेट प्रोजेक्ट आरंभ किया जा रहा है जिसके तहत कुछ महाविद्यालयों के पुस्तकालय के लिए प्रीलोडेड टैब उपलब्ध कराने के लिये सहायता मिलेगी। यह योजना आंकाक्षी महाविद्यालयों में आरंभ की जा रही है। आनलाइन शिक्षा के कार्ययोजना के तहत 2020–21 में डिजिटल लाइब्रेरी, आनलाइन कक्षाएं, शिक्षक प्रशिक्षण, आधारभूत सुविधाओं के विकास पर जोर है। 2021–23 के मध्य ई–सुविधा केन्द्रों का विश्वविद्यालय से समन्वय, आनलाइन कक्षा एवं परीक्षा, सोलर ग्रिड एवं इंटरनेट–कनेक्टीविटी, अकादमिक डाटा बैंक, प्रीलोडेड टैबलेट की उपलब्धता का लक्ष्य रखा गया है। 2023–25 के मध्य सभी संस्थानों में वर्चुअल लैब्स की स्थापना, उच्च शिक्षण संस्थानो का पूर्ण डिजिटलीकरण एवं इको–फ्रैन्डली कैम्पस की स्थापना की दिशा में कार्य जारी है। सरकार गुणवत्ता एवं रोजगारपरक उच्च शिक्षा, शिक्षकों की गुणवत्ता में अभिवृद्धि उनके कार्यों के आधार पर इंसेंटिव, प्रमोशन एवं पनिशमेन्ट को अपनाए जाने पर विचार कर रही है। विद्यार्थियों के कौशल विकास के साथ जीवन कौशल आधारित शिक्षा पर भी कार्य किया जा रहा है। उच्च शिक्षा डिजिटल लाइब्रेरी में दिव्यांगजन हेतु ई–कन्टेन्ट के सम्बन्ध में काम किया जा रहा है। सरकार ने अब छात्र छात्राओ की सुविधा के लिए आनलाइन अंकतालिका उपलब्ध कराने की व्यवस्था की है। शोध के क्षेत्र में विशेष बल दिया जा रहा है। ई लर्निंग की व्यवस्था लागू की गई है।

ऊर्जा आत्मनिर्भरता

बिना ऊर्जा के विकास की कल्पना नहीं है।

कल–कारखानें, विद्युत रेल,अस्पताल, शिक्षण संस्थान, परिवहन, घरेलू एवं व्यावसायिक उपयोग में बिना वद्युत के बिना जीवन रूक सा जाता है। सिंचाई के लिए विद्युत पम्पों का प्रयोग बढ़ा हैं। सरकार फसल सिंचाई हेतु कम दर पर बिजली दे रही है।कृषि विद्युत को घरेलू

विद्युत से अलग किया गया है।

प्रदेश में विद्युत की बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए योगी सरकार ने युद्धस्तर पर कार्य किए हैं, जिसका परिणाम अब सामने है। आज उत्तर प्रदेश का विद्युत उत्पादन एवं आपूर्ति के क्षेत्र में आत्मनिर्भरता की ओर कदम बढ़ रहा है।

2017 से आज तक उत्तर प्रदेश की वर्तमान सरकार द्वारा कुल 3098.77 मेगावाट की विद्युत परियोजनाएं पूर्ण की जा चुकी हैं, जिनमें बारा टी.पी.एस., ऊँचाहार–4, मेजा–1, टांडा–2 यूनिट–1, न्यूनबीनगर यूनिट–1, किशन गंगा हाइड्रो व केमेंग हाइड्रो यूनिट–1 व 2 शामिल हैं।

वर्तमान में प्रदेश में कुल 26997.5 मेगावाट की विद्युत परियोजनाएं कमीशन्ड हैं। जिनमें तापीय विद्युत 18643 मेगावाट, जलविद्युत 3371.5 मेगावाट, गैस आधारित विद्युत 549 मेगावाट, न्युक्लियर विद्युत 289 मेगावाट तथा नवीकरण ऊर्जा का हिस्सा 4145 मेगावाट है।

भविष्य में बढ़ते विद्युत की मांग की पूर्ति के लिए प्रदेश सरकार द्वारा 2029–30 तक की विद्युत मांग के सापेक्ष विद्युत आपूर्ति हेतु 42146.34 मेगावाट की उपलब्धता हेतु दीर्घकालीन योजना तैयार है, जिसमें से वर्तमान में 26997.5 मेगावाट विद्युत परियोजनाओं से बिजली प्राप्त हो रही है तथा शेष 15148.84 मेगावाट की परियोजनाओं से भविष्य में ऊर्जा प्राप्त होगी। प्रदेश में विद्युत की अतिरिक्त उपलब्धता बनाए रखने तथा सौर एवं पवन ऊर्जा के प्रोत्साहन हेतु वर्ष 2024 तक कुल 8150 मेगावाट की अतिरिक्त क्षमता निर्माण के अनुबंधित किए जाने की कार्ययोजना है।

उत्तर प्रदेश में नवीकरणीय ऊर्जा (रिन्युवल ऊर्जा) क्रय की कार्ययोजना भी प्रस्तावित है। इसके अंतर्गत 2020–21 से वर्ष 2023–24 तक कुल 6150 मेगावाट की सौर ऊर्जा तथा कुल 2000 मेगावाट की पवन ऊर्जा क्रय करने की कार्ययोजना है। प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के कुशल नेतृत्व में सुव्यवस्थित कार्य का ही परिणाम है कि औसत विद्युत उत्पादन लागत वित्तीय वर्ष 2016–17 में जहां 4.09 रुपये थी, वहीं वर्तमान वित्तीय वर्ष 2020–21 में 45 पैसे घटकर 3.64 रुपये हो गई है। प्रदेश में औसत विद्युत विक्रय दर 2016–17 में जहां 4.42 रुपये थी, वहीं वर्तमान वित्तीय वर्ष 2020–21 में 79 पैसे घटकर 3.63 रुपये हो गई है।

प्रदेश में पावर फार आल के के लिए मार्च 2017 से अब तक की अवधि में 01 नग 765 के.वी., 10 नग 400 के.वी. , 32 नग 220 के.वी. तथा 61 नग 132 के.वी. विद्युत उपकेन्द्रों कुल 104 नग तत्संबंधी पारेषण लाइनों का लगभग रुपये10077.40 करोड़ की लागत से ऊर्जीकरण किया गया है। प्रदेश की पारेषण क्षमता को 24000 मेगावाट एवं विद्युत आयात क्षमता को 13400 मेगावाट किया गया। स्थापित होने वाली तापीय परियोजनाओं जिसमें घाटमपुर विद्युत गृह, ओबरा–सी तापीय परियोजना एवं जवाहरपुर तापीय परियोजना से ऊर्जा निकासी हेतु आवश्यक पारेषण तंत्र तथा 400के.वी. उपकेन्द्र बदायूं एवं फिरोजाबाद का निर्माण कार्य टैरिफ बेस्ड कॉम्पेटेटिव बिडिंग (टी.बी.सी.बी.) के माध्यम से कराया जा रहा है। मेरठ, रामपुर, सिम्भावली तथा सम्भल में बड़े पारेषण उपकेन्द्रों का निर्माण भी इसी पद्धति से कराया जा रहा है। टी.बी.सी.बी. परियोजनाओं की लागतरूपये 6101.14 करोड़ है।

स्वास्थ्य ढांचा सुधार

योगी सरकार द्वारा स्वास्थ्य क्षेत्र में किये गये कार्यों की बानगीभर है पूर्वांचल में 40 साल से बच्चों की मौत का कारण बनने वाला जापानी बुखार योगी सरकार की

तत्परता और सही योजना से लगभग समाप्त हो रही है। 1978 से इंसेफेलाइटिस यानी दिमागी बुखार के हर साल 1,000 मामले सामने आते थे, जिनमें से 20–30 प्रतिशत बच्चों की मौत हो जाती थी। 1978, 1988 और फिर 2005 में दिमागी बुखार लाखों बच्चों की मौत हुई। 2005 के बाद दिमागी बुखार के मरीजों की संख्या तीन गुना बढ़ी। तब सालाना औसतन 3,000 मामले सामने आए। 2013–17 के पांच में से चार साल में इससे सालाना 600 से अधिक मौतें हुईं। उस समय प्रदेश के वर्तमान मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ पूर्वांचल में गोरखपुर संसदीय क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करते थे। अक्सर योगी जी बीमारी के काफी बढ़ने के बाद मेडिकल कालेज में पहुंचते थे। वे वहां की दुदर्शा को जानते थे। सत्ता में आते ही मुख्यमंत्री के तौर पर योगी आदित्यनाथ सरकार ने दिमागी बुखार से निपटने के लिए व्यापक योजना बनाई। सितंबर 2017 से स्क्रब टाइफस का इलाज शुरू किया गया। बड़े पैमाने पर जापानी इंसेफेलाइटिस को रोकने के लिए 2018 में वैक्सीनेशन प्रोग्राम चलाया गया, जिसमें 88 लाख बच्चों को कवर किया गया। प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों की फंडिंग बढ़ाई गई, जिससे वे अपने स्तर पर बेहतर ढंग से इलाज कर पाएं। जुलाई 2019 में दस्तक नाम का अभियान शुरू किया गया। इसमें घर–घर जाकर लोगों को संक्रमित बीमारियों से बचने और उनके इलाज की जानकारी दी गई। इनमें से हरेक पहल सराहनीय रही है। इसके साथ राज्य में वाटर इंफ्रास्ट्रक्चर में भी व्यापक सुधार किया गया। योगी सरकार की इस पहल से दिमागी बुखार के मरीज बच्चों और मौतों की संख्या में कमी आने लगी। 2018 और 2019 में होने वाली मौतों में कमी आई। 2020 में पूर्वांचल इस बीमारी से उबर गया।

ऐसे में अगर ये कहा जाये कि भाजपा के नेतृत्व में सरकार, विकास–विश्वास और सुशासन के अपने चार वर्ष के कार्यकाल को सफलता के साथ पूरा कर रही है तो इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं है। चार बरस में हर क्षेत्र में सरकार ने कीर्तिमान बनायें हैं। देश के सबसे बड़े राज्य में लुढ़की हुई कानून व्यवस्था बहाल हुई, पटरी से उतर चुके विकास कार्यों में तेजी से आई है। इसके लिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, गृह मंत्री अमित शाह, रक्षामंत्री राजनाथ सिंह और पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा जी का सहयोग मिलता रहा। 2019 में सरकार ने कुंभ का भव्य आयोजन कराया, जो दुनिया के लिए यूनिक इवेंट बना। काशी में प्रवासी भारतीयों का कार्यक्रम हुआ। यूपी इन्वेस्टर्स समिट के माध्यम से रोजगार सृजन किया गया। यूपी इन्वेस्टर्स समिट में 2019 के दौरान और उसके बादएमओयू में 08 जनवरी 2021 के अनुसार 50,516 करोड़ 64 लाख के 207 एमओयू द्वारा कामर्शियल आपरेशन प्रारंभ कर दिया गया। शुरू हो चुके इन 207 एमओयू में 1,26,911 नए रोजगार सृजित हुए हैं।

ढांचागत विकास योजनाओं पर सरकार ने सबसे पहले ध्यान दिया। आज यूपी में 7 एयरपोर्ट हैं। 11 एयरपोर्ट बनने का काम चल रहा है। पूर्वांचल एक्सप्रेस वे 60 फीसदी अपना काम कर चुकी है। अगले वर्ष तक जनता के लिए खुल जायेगा। 75 जिलों में बिजली की निर्वाध आपूर्ति हो रही है, सपा काल में 4–5 जनपदों में बिजली की आपूर्ति थी। आज 4 शहर मेट्रो के लिए तैयार हैं। 1 करोड़ 24 लाख से अधिक लोगों को बिजली का निःशुल्क कनेक्शन दिया गया है। 1 लाख 67 हजार गांव तक बिजली पहुंचाने का काम हुआ। प्रदेश के अंदर आयुष्मान के माध्यम से 5 लाख तक का इलाज देना हो या लाइफ सपोर्ट एम्बुलेंस का काम र हो, अंतिम पायदान पर बैठे व्यक्ति को बेहतर स्वास्थ सुविधा मिल रही है।

चार साल में एक भी दंगा नहीं हुआ, कानून व्यवस्था बेहतर हुई है। डकैती मामले में 60 फीसदी कमी आई है, बलवा के मामले 27 फीसदी कम हुए है, बलात्कार के मामले भी कम हुए है। जहां पुलिस लाइन नहीं थी वहां उसकी व्यवस्था की गई है। पुलिसकर्मियों के लिए आवास की व्यवस्था की व्यवस्था की है। प्रदेश में 18 रेंज मेंएक एक फोरेंसिक लैब बन रही है।

कई क्षेत्रों में यूपी नंबर वन

पिछली सरकार में चीनी मिलों के बंद होने उनको बेचने का काम किया गया पर पिछले चार साल में एक भी चीनी मिल बंद नहीं हुई है। आज गन्ना उत्पादन और चीनी उत्पादन और ऐथेनाल के उत्पादन में प्रदेश नंबर एक पर है।

भाजपा के कार्यालय हार्डवेयर और पार्टी कार्यकर्ता साफ्टवेयर : जगत प्रकाश नड्डा

भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जगत प्रकाश नड्डा ने वाराणसी में पार्टी के काशी क्षेत्रीय कार्यालय और प्रयागराज महानगर कार्यालय का उद्घाटन किया। उन्होंने वीडियो कांफ्रेंसिंग के जरिये पार्टी के प्रयागराज महानगर कार्यालय का भी उद्घाटन किया। आयोजित समारोह में राष्ट्रीय अध्यक्ष ने कहा कि ये काशी क्षेत्र के लोगों और पार्टी कार्यकर्ताओं का सौभाग्य है कि, एक ओर उन्हें बाबा विश्वनाथ का सान्निध्य मिल रहा है तो दूसरी ओर देश के यशस्वी प्रधानमंत्री जी के रूप में उन्हें कर्मयोगी जन–प्रतिनिधि मिला है।

राष्ट्रीय अध्यक्ष ने कार्यालयों के उद्घाटन अवसर पर कहा कि भारतीय जनता पार्टी के लिए कार्यालय कार्यकर्ताओं को संस्कारित करने और उनके सामाजिक एवं राजनीतिक व्यक्तित्व को निखारने का केंद्र होते हैं। मुझे विश्वास है कि ये कार्यालय पार्टी की नींव को प्रदेश में और मजबूत करने में सहायक होंगे।

श्री नड्डा ने रविवार 28 फरवरी को वाराणसी आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कार्यालय को पार्टी कार्यकर्ताओं को संस्कारित करने का केंद्र बताया। कार्यक्रम में उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, उत्तर प्रदेश के पार्टी प्रभारी राधा मोहन सिंह, प्रदेश भाजपा अध्यक्ष स्वतंत्र देव सिंह, उप–मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य, केंद्र सरकार में मंत्री महेन्द्रनाथ पांडेय, सह–प्रभारी सुनील ओझा, प्रदेश महामंत्री (संगठन) सुनील बंसल एवं कई अन्य वरिष्ठ पार्टी पदाधिकारियों के साथ–साथ बड़ी संख्या में पार्टी कार्यकर्ता उपस्थित थे।

मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् श्री राम, भगवान् श्रीकृष्ण और कशी विश्वनाथ की धरती उत्तर प्रदेश को शत–शत नमन करते हुए श्री नड्डा जी ने इसे संत रविदास सहित अनगिनत महान ऋषि–मुनियों की जन्मभूमि और कर्मभूमि बताया। कहा कि प्रधानमंत्री चुने जाने के तुरंत बाद आदरणीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने कार्यकर्ताओं को आगे बढ़ने का मंत्र देते हुए देश के कोने–कोने में पार्टी के विस्तार हेतु देश के हर जिले में अपना पार्टी कार्यालय होने की इच्छा व्यक्त की थी। जब उन्होंने इस लक्ष्य को संगठन के सामने रखा तो तब के पार्टी अध्यक्ष और वर्तमान में देश के गृह मंत्री श्री अमित शाह जी ने देश में लगभग सभी जिलों में 700 कार्यालयों के निर्माण का बीड़ा उठाया। आज मुझे कहते हुए आनंद की अनुभूति हो रही है कि देश में केंद्रीय कार्यालय सहित अब तक लगभग 400 कार्यालय बन गए हैं। उत्तर प्रदेश में भी पार्टी के 81

कार्यालयों का निर्माण होना था जिसमें से 51 कार्यालय का निर्माण पूरा हो गया है। आज काशी क्षेत्र के क्षेत्रीय कार्यालय और प्रयागराज महानगर कार्यालय के उद्घाटन के साथ ही प्रदेश में 53 कार्यालय बन कर तैयार हैं और इसी वर्ष अक्टूबर माह तक सभी 80 कार्यालय बन कर तैयार हो जायेंगे।

उन्होंने कहा कि भारतीय जनता पार्टी के कार्यालय हार्डवेयर और कार्यकर्ता साफ्टवेयर होते हैं। मुझे विश्वास है कि ये कार्यालय पार्टी की नींव को प्रदेश में और मजबूत करने में सहायक होंगे। किसी भी पार्टी को सुचारू रूप से चलाने के लिए कार्यकर्ता, कार्यक्रम, कार्यकारिणी, कोष और इसे संचालित करने के लिए कार्यालय। मैं आज इन दोनों कार्यालयों के शिलान्यास अवसर पर पार्टी कार्यकर्ताओं को हार्दिक बधाई देता हूँ। राष्ट्रीय अध्यक्ष ने कहा कि देश में सकारात्मक परिवर्तन लाने में और देश को परम वैभव की ओर ले जाने के लिए यदि कोई पार्टी कटिबद्ध होकर काम कर रही है तो वह केवल और केवल भारतीय जनता पार्टी ही है। बाकी सारी राष्ट्रीय पार्टियां, क्षेत्रीय पार्टियां बन कर रह गई है। देश भर की लगभग सभी राजनीतिक पार्टियां आज परिवार की पार्टी बन कर रह गई है जबकि भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ताओं के लिए पार्टी ही परिवार है।

उन्होंने कहा कि हम सदैव अपने सिद्धांतों पर और अपनी विचारधारा पर अटल रहे और यही कारण है कि आज आज भाजपा दुनिया का सबसे बड़ा राजनीतिक दल है। हमने मुश्किलों को चुनौतियों के तौर पर लिया और उस पर विजय पाई। जब दूसरे राजनीतिक दल हमारा मजाक उड़ाया करते थे, तब भी हम अपनी विचारधारा के प्रति कटिबद्ध थे क्योंकि देश को आगे बढ़ाना और गरीबों को समाज की मुख्यधारा में शामिल करना हमारा एकमात्र लक्ष्य था। हम सत्ता की राजनीति के लिए नहीं बने हैं। सत्ता हमारा लक्ष्य नहीं है। हमारे लिए सत्ता देश की तस्वीर और तकदीर बदलने और देश को विश्वगुरु के पद पर पुनः प्रतिष्ठित करने का एक माध्यम है।

श्री नड्डा ने कहा 80 के दशक में लोग हमसे हमारा इकोनोमी माडल पूछा करते थे। उस समय हम गर्व से एकात्म मानववाद और अंत्योदय के सिद्धांत की बात करते थे जो हमारे मनीषी पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी ने प्रतिपादित किया था। इसके बाद से लेकर अब तक हमारी पार्टी की सभी सरकारों के लिए ये सिद्धांत मूलमंत्र रहे हैं। प्रधानमंत्री ने अंत्योदय को अपनी योजनाओं का केंद्र बनाते हुए 'सबका साथ, सबका विकास और सबका विश्वासश के सिद्धांत को सरकार की कार्यसंस्कृति का आधार बनाया। उन्होंने प्रधानमंत्री बनते ही यह स्पष्ट कर दिया था कि उनकी सरकार गाँव, गरीब, किसान, दलित, पीड़ित, शोषित और वंचितों के लिए समर्पित सरकार होगी और विगत छः वर्षों में उन्होंने इसे चरितार्थ कर दिखाया है। चाहे वह उज्ज्वला योजना हो, उजाला योजना हो, स्वच्छ भारत अभियान हो, आयुष्मान भारत हो, किसान सम्मान निधि हो, प्रधानमंत्री आवास योजना हो, अटल पेशन योजना हो या सामाजिक सुरक्षा कवच की योजनायें – ये सभी आम नागरिकों के सशक्तिकरण के लिए ही बनाए गए हैं। हमारा एकमात्र लक्ष्य रहा है – समाज में पीछे छूट गए लोगों को विकास की मुख्यधारा से जोड़ते हुए उन्हें आगे बढ़ाना।

राष्ट्रीय अध्यक्ष ने कहा उत्तर प्रदेश में योगी आदित्यनाथ जी के नेतृत्व में भारतीय जनता पार्टी की प्रदेश सरकार मोदी सरकार की हर कल्याणकारी योजना को जमीन पर उतारा है। सभी प्रमुख योजनाओं के क्रियान्वयन में उत्तर प्रदेश काफी आगे है। आयुष्मान भारत और किसान सम्मान निधि योजना को काफी अच्छे तरीके से उत्तर प्रदेश ने आत्मसात किया है। आयुष्मान भारत के तहत अब तक देश के लगभग डेढ़ करोड़ लोगों को लाभ मिला है। इस पर अब तक लगभग 20 हजार करोड़ रुपये खर्च हो चुके हैं। प्रधानमंत्री जी ने एक हजार दिनों में आजादी के 70 साल बाद भी बिजली से वंचित18 हजार गाँवों में बिजली पहुंचाई। सौभाग्य योजना के तहत अब तक ढाई करोड़ घरों में बिजली पहुंचाई जा चुकी है। इस योजना के माध्यम से उत्तर प्रदेश के 70 लाख घरों में बिजली पहुंची है। स्वच्छ भारत अभियान के तहत देश भर में लगभग 11 करोड़ इज्जत घर बनाए गए जिसमें से 2.61 लाख इज्जत घर अकेले उत्तर प्रदेश में बने। यह महिला सशक्तिकरण का अनुपम उदाहरण है। प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना के तहत देश के 8 करोड़

से अधिक गरीब महिलाओं को गैस कनेक्शन उपलब्ध कराये गए।

कोविड–19 के संक्रमण काल में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने कोरोना के खिलाफ निर्णायक लड़ाई में न केवल देश का आगे बढ़ कर नेतृत्व किया बल्कि उन्होंने दुनिया को आगे बढ़ने की राह भी दिखाई है। कोरोना संक्रमण के शुरूआती चरणों में जब दुनिया के शक्तिशाली देश भी फैसला नहीं ले पा रहे थे कि मानवता को बचाने की लड़ाई लड़ी जाय या फिर आर्थिक विकास पर फोकस किया जाय। उन देशों में अच्छी से अच्छी स्वास्थ्य व्यवस्था होने के बावजूद उनका सिस्टम चरमरा गया था और वे असहाय महसूस कर रहे थे। इस दौरान हमारे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने मानवता को बचाने के लिए कोरोना से लड़ाई लड़ने का एलान किया और समय पर लाकडाउन का निर्णय लेते हुए 130 करोड़ देशवासियों की सुरक्षा सुनिश्चित की। लाकडाउन की शुरूआत में जहाँ देश में एक भी डेडिकेटेड कोविड हास्पिटल नहीं था, वहीं आज 2,000 से अधिक डेडिकेटेड कोविड हास्पिटल्स हैं। इसी तरह आज लगभग ढाई हजार टेस्टिंग लैब्स हैं और हमारी टेस्टिंग क्षमता रोजाना औसतन लगभग 11 लाख से अधिक है जबकि शुरुआत में हमारी क्षमता महज 1,500 टेस्टिंग प्रतिदिन की ही थी। लाकडाउन की शुरुआत में जहां हम पीपीई किट, फेस मास्क और वेंटिलेटर के लिए आयात पर निर्भर थे, वहीं आज हम इसका निर्माण कर रहे हैं। आज प्रतिदिन चार लाख से अधिक पीपीई किट का उत्पादन हो रहा है, हजारों वेंटिलेटर्स का उत्पादन हो रहा है।

कोविड मैनेजमेंट पर बोलते हुए राष्ट्रीय अध्यक्ष ने कहा कि प्रधानमंत्री ने सही समय पर सही और साहसिक निर्णय लेते हुए न केवल 130 करोड़ देशवासियों की सुरक्षा सुनिश्चित की, बल्कि आत्मनिर्भर भारत अभियान और गरीब कल्याण पैकेज के माध्यम से देश के हर वर्ग को सामाजिक आर्थिक सुरक्षा देने की मुहिम की भी शुरुआत की। प्रधानमंत्री जी ने 1.70 लाख करोड़ रुपये की गरीब कल्याण योजना और 20 लाख करोड़ रुपये के आत्मनिर्भर भारत अभियान के जरिये न केवल अर्थव्यवस्था को नई गति दी बल्कि देश के लगभग 80 करोड़ गरीब लोगों के सशक्तिकरण का कदम भी उठाया। संक्रमण काल में देश के साढ़े आठ करोड़ से अधिक किसानों को प्रधानमंत्री कृषि सम्मान निधि की तीन किस्तें दी गई। एक लाख करोड़ रुपये की एग्रिकल्चरल इन्फ्रास्ट्रक्चर की योजना को शुरू की गई है। लॉकडाउन के दौरान मोदी सरकार ने 20 करोड़ महिला जन–धन खाता धारकों के एकाउंट में पांच–पांच सौ रुपये की तीन किस्तें अर्थात् प्रत्येक को 1,500 रुपये, तीन करोड़ दिव्यांगों, विधवाओं एवं बुजर्गों को हजार–हजार रुपये और उज्ज्वला योजना के तहत 8 करोड़ से अधिक महिलाओं को तीन मुफ्त गैस सिलिंडर की मदद दी। प्रधानमंत्री ने देश के 80 करोड़ गरीबों एवं प्रवासी मजदूरों को लॉकडाउन से राहत देने के उद्देश्य से दिवाली–छठ यानी नवंबर माह तक मुफ्त राशन की व्यवस्था की। आत्मनिर्भर भारत अभियान के तहत सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योगों के कल्याण एवं रोजगार सृजन करने हेतु तीन लाख करोड़ रुपये की व्यवस्था की गई।

राष्ट्रीय अध्यक्ष जी ने कहा कि अब आदरणीय प्रधानमंत्री ने आत्मनिर्भर अभियान और वोकल फार लोकल का मंत्र दिया है। मुझे खुशी है कि योगी आदित्यनाथ जी ने 'वन डिस्ट्रिक्ट, वन प्रोडक्ट का अभियान शुरू किया है जो आत्मनिर्भर भारत अभियान के संकल्प को पूरा करने में बड़ी भूमिका का निर्वहन करेगा। हमें आत्मनिर्भर उत्तर प्रदेश बनाना है।

श्री नड्डा ने कहा कि किसानों के कल्याण एवं उनकी आय को बढ़ाने के लिए जितना काम प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में केंद्र की भारतीय जनता पार्टी सरकार ने किया है, उतना किसी भी अन्य पार्टियों की सरकार ने कभी भी नहीं किया। एक ओर प्रधानमंत्री जी ने किसान सम्मान निधि के माध्यम से देश के सभी किसानों को कृषि के लिए आर्थिक रूप से सक्षम बनाने में मदद दी तो वहीं दूसरी ओर उन्होंने फसल बीमा योजना, स्वायल हेल्थ कार्ड, नीम कोटेड यूरिया, ई–नाम आदि योजनाओं से उनकी आय को बढ़ाने के सार्थक प्रयास किये।

प्रदेश में लिखी जा रही है विकास की महागाथा : जगत प्रकाश नड्डा

भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जगत प्रकाश नड्डा ने रविवार 28 फरवरी को वाराणसी में आयोजित सामाजिक नेताओं के साथ एक संवाद में कहा कि, प्रधानमंत्री जी ने कमीशन की राजनीति को मिशन की राजनीति बनाया। स्वार्थ की राजनीति को सेवा का माध्यम बनाया। तुष्टिकरण की राजनीति को सबका साथ, सबका विकास और सबका विश्वास की राजनीति बदल दिया। मोदी सरकार का सिद्धांत है – न्याय सबके लिए लेकिन तुष्टिकरण किसी के लिए भी नहीं। प्रधानमंत्री जी ने विकासवाद की संस्कृति शुरू की। काशी के लोग भाग्यशाली हैं कि, वे इस परिवर्तन के गवाह हैं। भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष चौधरी लान, नरिया, बीएचयू (वाराणसी) में बोल रहे थे। राष्ट्रीय अध्यक्ष ने इस अवसर पर प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में देश में हो रहे विकास के परिवर्तन को रेखांकित करते हुए भारतीय जनता पार्टी की कार्यसंस्कृति की चर्चा की।

श्री नड्डा ने कहा कि, बाबा भोलेनाथ की नगरी काशी अध्यात्म का उद्गम स्थान तो है ही, साथ ही साथ राजनीति के कार्यसंस्कृति में बदलाव का भी उद्गम स्थान बन रहा है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी के रूप में काशी की जनता को एक कर्मयोगी जन–प्रतिनिधि मिला है जो देश के जन–जन के कल्याण के लिए कटिबद्ध हैं। प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में राजनीति की परिभाषा बदल गई है। उन्होंने कहा कि 2014 से पहले देश की क्या स्थिति थी, यह सबको मालूम है। हर जगह भ्रष्टाचार की बात होती थी, देश में आये दिन घपले–घोटाले के समाचार सुर्खियाँ बनते थे लेकिन आज मोदी जी के नेतृत्व में विकास की कहानियां देश का प्रतिनिधित्व करती हैं। उन्होंने कहा कि कोविड मैनेजमेंट में प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में दुनिया को रास्ता दिखाने का काम भारत ने किया। मेडिकल इन्फ्रास्ट्रक्चर के क्षेत्र में भारत आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ चला है। क्या किसी ने कल्पना भी की थी कि भारत दो–दो मेड इन इंडिया कोविड वैक्सीन का निर्माण करेगा और मानवता को बचाने का नया अध्याय लिखेगा?

भाजपा अध्यक्ष ने कहा कि स्वच्छ भारत अभियान के तहत देशभर में जहां 11 करोड टायलेट्स बने, वहीं उत्तर प्रदेश में लगभग 2 करोड टायलेट्स का निर्माण हुआ। यह केवल इज्जत घर नहीं बल्कि मातृशक्ति के सशक्तिकरण के माध्यम हैं। कांग्रेस ने जन–धन योजना का भी मजाक उड़ाया था लेकिन इंदिरा गांधी जी ने 1971–72 में बैंकों का राष्ट्रीयकरण करते हुए यह कहा था किससे गरीबों के लिए बैंक के दरवाजे खुलेंगे लेकिन 2014 तक देशभर में केवल पौने तीन करोड़ बैंक अकाउंट ही खुले थे। आज प्रधानमंत्री मोदी जी के नेतृत्व में देशभर में 50 करोड़ खाताधारक हैं जिसमें से लगभग 41 करोड जनधन खाते हैं। इन 41 करोड़ जनधन खातों में से 7 करोड़ अकाउंट अकेले उत्तर

जबकि कांग्रेस की सरकार ने तो भगवान् श्री राम पर भी प्रश्नचिह्न लगा दिए थे। मुस्लिम बहनों को ट्रिपल तलाक के अभिशाप से भी आजादी मिली। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने आरक्षण की वर्तमान व्यवस्था में कोई फेर–बदल किये बगैर आर्थिक आधार पर देश के गरीबों के लिए 10 प्रतिशत आरक्षण का प्रावधान किया। ये सारे बहुप्रतीक्षित कार्य इसलिए संपन्न हुए क्योंकि मोदी सरकार की नीति और नीयत स्पष्ट है।

प्रदेश में खुले हैं। उज्जवला योजना में भी जहां देश के 8 करोड़ से अधिक गरीब परिवारों को गैस कनेक्शन मिले वहीं उत्तर प्रदेश में 1.47 करोड़ गैस कनेक्शन वितरित किए गए। प्रधानमंत्री सौभाग्य योजना के तहत उत्तर प्रदेश के 1.28 करोड़ घरों में बिजली पहुंचाई गई। प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि के तहत अब तक देश के लगभग 9 करोड किसानों के अकाउंट में 1.13 लाख करोड़ की राशि पहुंचाई जा चुकी है। जितना काम किसानों के लिए मोदी सरकार ने विगत छः वर्षों में किया, उतना कांग्रेस की सरकारों ने आजादी के 70 सालों में भी नहीं किया।

श्री नड्डा ने कहा कि माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी की दृढ़ राजनीतिक इच्छाशक्ति एवं गृह मंत्री अमित शाह जी की कुशल रणनीति के बल पर धारा 370 धाराशायी हुआ। कांग्रेस ने माहौल को बिगाड़ने की भरपूर कोशिश की, गुपकर ने भी मिल कर चुनाव लड़ा लेकिन जम्मू–कश्मीर में पहली बार हुए डिस्ट्रिक्ट डेवलपमेंट काउंसिल के चुनाव में भाजपा न केवल सबसे बड़ी पार्टी बन कर उभरी बल्कि सबसे ज्यादा वोट भी भाजपा को ही मिला। कहाँ गए जम्मू–कश्मीर में खून–खराबे की बात करने वाले? ये मोदी सरकार है जिसके अथक प्रयासों से अयोध्या में भगवान् श्रीराम की जन्मभूमि पर भव्य राम मंदिर बनने का सपना साकार हो रहा है

श्री नड्डा ने कहा कि उजाले की इज्जत तभी होती है जब अंधेरे की पहचान होती है। आज आयुष्मान भारत योजना के तहत देश के करोड़ों गरीब लोगों का कल्याण हो रहा है। उज्ज्वला, उजाला, सौभाग्य आदि योजनाओं से महिला सशक्तिकरण के काम हो रहे हैं। वाराणसी में संत रविदास जी के नाम पर बहुत बड़ा उद्यान बन रहा है। पिछले अक्टूबर से लेकर अब तक में वाराणसी में प्रधानमंत्री जी ने 10,000 करोड़ रुपये की परियोजनाओं को शुरू किया है। सारे उत्तर प्रदेश में विकास की ऐसी ही गाथा लिखी जा रही है। गोरखपुर में एम्स बन रहा है। विगत छह वर्षों में ही तीस नए मेडिकल कालेज खोलने की शुरुआत हुई है। आज पूरा उत्तर प्रदेश बदलती हुई विकास की तस्वीर देख रहा है। योगी आदित्यनाथ जी के सुशासन की बदौलत अब अपराधी छुपने के लिए बिल ढूँढ रहे हैं। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी के शासन में विकास की कहानी के साथ साथ उत्तर प्रदेश की कानून व्यवस्था में भी आमूलचूल परिवर्तन आया है। आज हम गर्व के साथ कह सकते हैं कि योगी आदित्यनाथ जी के नेतृत्व में उत्तर प्रदेश में ला एंड आर्डर की स्थिति में सकारात्मक बदलाव आया है।

मऊ में लौह पुरूष सरदार बल्लभ भाई पटेल जी की प्रतिमा का अनावरण व अन्य कार्यक्रम

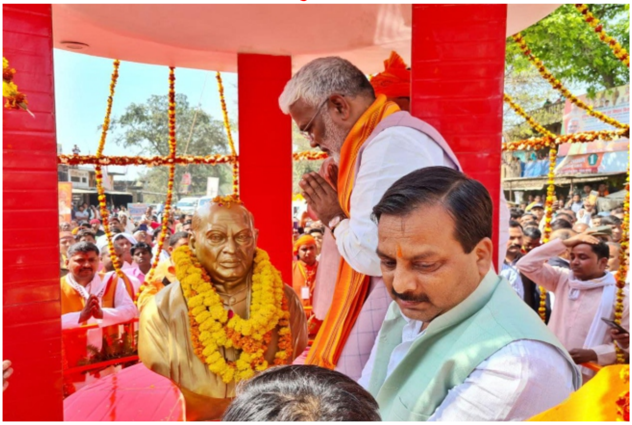

काशी में विभीन्न कार्यक्रमों में मा0 राष्ट्रीय अध्यक्ष जी मा0 मुख्यमंत्री जी एवं मा0 प्रदेश अध्यक्ष जी

स्किल्ड पावर बनता यूपी

2017 में प्रदेश में भाजपा सरकार आने के बाद मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने एक विकासात्मक मॉडल बनाकर योजनाओं को आगे बढ़ाया। मुख्यमंत्री के विजन और उनके द्वारा प्रदेश को सार्म्थयवान बनाने की दिशा में निरंतर प्रयास हुआ। संगठन के साथ सरकार का प्रयास रहा कि उत्तर प्रदेश एक स्किल्ड मैन पावर बनकर उभरे। प्रदेश एक बिजनेस डेस्टिनेशन बने। तीव्र गति से आगे बढ़ने वाली अर्थव्यवस्था के रूप में और समृद्ध–स्वावलम्बी सामाजिक–आर्थिक रूप में पहचान बना सके।

इस दृष्टि से अगर 2017–18 से लेकर 2021–22 तक के आर्थिकी को समझे तो ज्ञात होगा कि सरकार ने कैसे माइक्रो और मैक्रो प्रणाली के तहत आर्थिक क्षेत्र में काम किया। इससे प्रदेश 'सकल राज्य घरेलू उत्पाद' में दूसरे नम्बर पर आ गया। प्रतिव्यक्ति लगभग 75000 रुपये की आय वाला स्टेट बन गया जिसमें कोरोना काल में .04 प्रतिशत की कमी आई। लेकिन आय में दो गुनी वृद्धि करने में भाजपा सरकार को सफलता मिली।

सरकार ने पिछले चार बजट को हर बार नया कलेपर दिया। 2017–18 का पहला बजट किसानों को समर्पित था। 2018–19 में औद्योगिक विकास, 2019–20 में महिलाओं सशक्तिकरण और 2020–21 युवाओं की शिक्षा, कौशल संवर्द्धन, रोजगार, को समर्पित रहा। पिछले चार वर्षों में सरकार लक्ष्य प्राप्ति

की दिशा में बढ़ती रही। अब कोविड–19 संक्रमण काल में बेहतर प्रबंधन के बाद 2021–22 के बजट को 'समग्र विकास एवं समावेशी विकास की ओर लेकर बढ़ गई। प्रदेश स्वावलम्बन से आत्मनिर्भर प्रदेश की ओर बढ़ गया है।

2021–22 में 'आत्मनिर्भर उत्तर प्रदेश' सम्बंधी अवधारणा के लिए चार स्तम्भों की कल्पना की है। ये चार पिलर्स हैं– अवस्थापना विकास, पब्लिक हेल्थ, ह्यूमन कैपिटल एवं सामाजिक–सांस्कृतिक विकास और कृषि एवं सम्बद्ध योजनाएं। सरकार ने स्टेब्लिशमेंट को सबसे ऊपर रखा गया है। यूपी में मानव संपदा भी एक महत्वपूर्ण घटक है। यूपी के संदर्भ मे तो इसलिए भी क्योंकि यह देश की सबसे अधिक आबादी वाला प्रदेश है। इसलिये सरकार ने बजट में किसानों, महिलाओं, युवाओं, उद्यमियों तथा श्रमिकों की समस्याओं के प्रति संवेदनशीलता दिखायी है। शिक्षित युवाओं में उद्यम आधारित कौशल की कमी प्रायः रोजगार प्राप्ति में बड़ी बाधा रही है। इसलिये कौशल विकास कार्यक्रम, करियर काउंसलिंग कार्यक्रम, मुख्यमंत्री अमृत योजना को वरीयता मिली है जिससे युवाओं को रोजगार मिलेगा। खेलकूद में प्रोत्साहन से युवाओं में स्वावलंबन की भावना बढेगी और रोजगार सृजन भी होगा। उच्च शिक्षा को अंतरराष्ट्रीय बनाने का संकल्प, प्रदेश के युवाओं को वर्तमान राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा के योग्य बनाने में सरकार एक कदम आगे बढ़ा चुकी है।

उत्तर प्रदेश में खेती में सबसे अधिक मानव नियोजन होता है। इसलिये कृषि सबसे महत्वपूर्ण सेक्टर है। कृषकों, कृषि मजदूरों और ग्रामीण क्षेत्र को केन्द्र में रखते हुए इस बात पर सरकार का फोकस है कि कृषि और ग्रामीण अर्थव्यवस्था की समृद्धि के बिना प्रदेश का समावेशी और सर्वांगीण विकास नहीं हो सकता। सरकार 2022 तक कृषकों की आय दोगुनी करने का संकल्प दोहरा रही है। इसके लिये योजनाओं के बेहतर उपयोग और उसके लिये अवस्थापना गैप्स को पूरा करने के लिये 2021–22 से आत्मनिर्भर कृषक समन्वित विकास योजना क्रियान्वित करने का निर्णय लिया गया है। इसमें किसानों को फसली ऋण उपलब्ध कराने के साथ–साथ मुफ्त पानी तथा अनुदान पर सोलर सिंचाई पंप लगाने का बजटीय प्रावधान किया गया है। कृषक उत्पादक संगठन (एफपीओ) को ध्यान में रखते हुए ग्राम व न्याय पंचायत स्तर पर कोल्ड स्टोरेज और कोल्ड चेन बनाने का निर्णय कृषि क्षेत्र में व्यापक परिवर्तन लायेगा। सरकार की नीति है कि सकल राज्य घरेलू उत्पाद में कृषि एवं सम्बद्ध क्षेत्रों का योगदान भले ही एक चौथाई हो लेकिन प्रदेश की बड़ी आबादी कृषि पर ही निर्भर है। इसलिये समावेशी विकास के लिएकृषि को प्राथमिकता मिली। कृषि को आधुनिक बनाने की दिशा में एक रोडमैप भी है।

विकास के लिये इंफ्रास्ट्रक्चर को उत्प्रेरक या ग्रोथ इंजन माना जाता है। इसके बिना आर्थिक विकास 'तीव्र और प्रतिस्पर्धी' नहीं हो सकता। इस स्थिति में ईजिंग के प्रयास भी महत्वहीन हो जाते हैं। ईज आफ डूइंग बिजनेस में प्रदेश को सबसे आगे रखना और रोजगार सृजन में उत्तर प्रदेश को शीर्ष पर स्थापित करना सरकार की प्राथमिकता रही है।। परिणामातः ईज आफ डूइंग बिजनेस रैंकिंग में पिछले तीन वर्ष में तीव्र उछाल के साथ दूसरा स्थान हासिल किया और सकल राज्य घरेलू उत्पाद के मामले में प्रदेश ने गुजरात, कर्नाटक और तमिलनाडु को पीछे छोड़ते हुए दूसरा स्थान प्राप्त किया है। यह सब मुख्यमंत्री के कुशल नेतृत्व में बदली हुयी कार्य संस्कृति, सर्वश्रेष्ठ प्रबंधन, इनोवेटिव एनीशिएटिव्स, उद्यमशीलता, दुरुस्त कानून एवं व्यवस्था, आर्थिक सुधार, बिजनेस फ्रेंडली वातावरण का निर्माण और मेक इन यूपी को मिले प्रोत्साहन से हुआ है। चार वर्षों के कार्यकाल में उत्तर प्रदेश को विश्वस्तरीय कनेक्टिविटी देने के लिए की गई कोशिशें निर्णायक रहीं। एयर, वाटर और रोड कनेक्टिविटी पर प्रदेश में अभूतपूर्व कार्य किया गया है।

इन पहलों के आधार पर बजट राजकोषीय संतुलन के साथ–साथ तीव्र, विकास के साथ ही रोजगार के अवसरों की अपार संभावनाओं से युक्त है। अर्थव्यवस्था की बैकबोन बनें एमएसएमई और ओडीओपी के लिए बूस्टर डोज है। किसान कल्याण एवं वैज्ञानिक कृषि पर फोकसहै। सांस्कृतिक पुनरुत्थान और सांस्कृतिक अर्थव्यवस्था को नई दिशा भी दे रहा है। मानव पूंजी को कुशल, समृद्ध व दक्ष बनाकर देश और दुनिया में सृजित होने वाले अवसरों के साथ जोड़ने और महिलाओं को सुरक्षा तथा सम्मान के साथ सर्वांगीण विकास के रोडमैप की तरह है। बजट प्रदेश में ईज आफ डूइंग बिजनेस से ईज आफ लिविंग तक सभी आयामों को स्पर्श कर 'आत्मनिर्भर उत्तर प्रदेश' के मंतव्यों को पूरा कर रहा है।

ए के त्रिपाठी

जनता के बीच लेकर जाएंगे उपलब्धियाँ

जन–जन का सपना साकार चार बरस की हुई सरकार

अपना पांचवां बजट देने के तुरंत बाद उत्तर प्रदेश की योगी आदित्यनाथ सरकार अब एक्शन मोड में है। बजट के जरिए मिशन–विकास को लेकर सरकार ने नई पारी आरंभ कर दी है। सरकार के चार वर्ष पूरे होने के अवसर पर पूरे प्रदेश में कार्यक्रम आयोजित करके सरकार अपने कार्यों को जनता के बीच लेकर जा रही है।19 मार्च से सरकार की उपलब्धियों को घर–घर तक पहुंचाने के लिए अभियान को स्वयं मुख्यमंत्री प्रस्तुत करेंगे। अपने पांचवें बजट में फिर से सरकार बनाने की आशा से प्रदेश को रूबरू कराते हुए सरकार ने युवाओं से लेकर किसानों और महिलाओं के साथ ा–साथ अपने सभी चुनवी वायदों को पूरा करने पर जोर दिया है। सरकार ने पार्टी के एजेंडे और शहरी मतदाताओं के लिये बजट में पांच बड़े राजनीतिक संदेश दिये हैं।

चार वर्ष पूरे होने की खुशी में आयोजित होने वाले कार्यक्रमों में किसानों और बेरोजगारी दूर करने के लिए उठाए गए कदमों पर ज्यादा फोकस किया जा रहा है। कोरोना काल में प्रदेश सरकार ने जिस तरह से मजदूरों की मदद की, लोगों के लिए अन्न के भंडार खोले, आर्थिक मदद की और इस दौरान भी विकास कार्यों को जारी रखा, यह योगी सरकार की बड़ी उपलब्धि थी, जिसे योगी सरकार जनता के बीच लेकर जा रही है।

सरकार के चार वर्ष पूरे पर 19 मार्च से जिला व प्रदेश स्तर पर कई कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं, ताकि सरकार की उपलब्धियों को जन–जन तक पहुँचाया जा सके। ऐसा चुनावी आहट में करना बेहद जरूरी है। वैसे भी सरकार और संगठन दोनों ही चुनावी मोड में हैं। पंचायत चुनाव आरंभ हो रहे हैं। इसलिये बीजेपी का मिशन–2022 तेजी पकड़ता जा रहा है। फिलहाल भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश स्तर के पदाधिकारी और कार्यकर्ता एवं सरकार के मंत्री लगातार आम लोगों के बीच जाकर सरकार की उपलब्धियों को रख रहे हैं। संगठन पूरी तरह से पंचायत चुनावों में जुट गई है। पांच राज्यों– पश्चिम बंगाल, तमिलनाडु, असम, केरल और पुदुचेरी (केन्द्र शासित प्रदेश) चुनाव जीतने के बाद अपने बेहतर प्रदर्शन का उत्तर प्रदेश के विधानसभा चुनाव पर असर रहेगा।

विकास की शिला पर चौबीस पग

मुख्यमंत्री की छवि एक सख्त प्रशासक, अपराध पर जीरो टालरेंस और विकास के लिए बड़े सपने देखने वाले मुखिया के रूप में उभरी है।एंटी–रोमियो अभियान, अवैध बूचड़खाने और गोरक्षा अभियान, 100 दिनों के अंदर सड़कों को गड्ढा मुक्त करना, सीएए के खिलाफ हुए विरोध प्रदर्शन पर कार्रवाई, माफियाओं द्वारा कब्जा की गई अवैध संपत्ति पर बुलडोजर, अवैध मकानों का ध्वस्तीकरण, माफियाओं पर नकेल। कोविड–19 का संक्रमण रोकने के लिए उठाए गए त्वरित कदम, लाकडाउन में प्रवासी श्रमिकों का प्रबंधन एनकाउंटर से अपराधियों में खौफ, ये काम चार साल में भाजपा सरकार की पहचान बने हैं। मुख्यमंत्री ने चार साल में राज्य को औद्योगिक राज्य बनाने की दिशा में भी कदम उठाए हैं। देश के सबसे लंबे एक्सप्रेस–वे का जाल बिछाने की घोषणा तो ईज आफ डूइंग बिजनेस रैंकिंग में 12 पायदानों की उछाल के बाद दूसरे नंबर यूपी का आना। करीब 2.25 लाख करोड़ रुपये के निवेश प्रस्तावों पर काम शुरू करने का अभियान।

अब इतने के बाद भी बताने को बहुत कुछ बाकी है...!

2017 में सरकार बनते ही पहली कैबिनेट में ही 86 लाख छोटे किसानों के 36 हजार करोड़ रुपये के कर्ज माफ किए गए। धान की खरीद में सरकार ने रिकार्ड बनाया है। भारतीय खाद्य निगम के आंकड़ों के अनुसार 28 दिसंबर 2020 तक उत्तर प्रदेश अकेला ऐसा राज्य है जिसने लक्ष्य से अधिक धान की खरीद की। इस अवधि में 56.57 लाख टन धान की खरीद की जो लक्ष्य से 1.35 लाख टन ज्यादा है। गेहूं के लिए सरकार ने प्रदेश में 6000 खरीद केंद्र खोले और 65 लाख टन से ज्यादा गेहूं की खरीद की है। गन्ने के उत्पादन में भी प्रदेश नंबर एक बना है। लाकडाउन के दौरान गन्ने की आपूर्ति अबाध रखी गई, जिससे चीनी मिलों के बंद होने की नौबत नहीं आई। इस दौरान 5,953 करोड़ रुपये का गन्ना भुगतान किया गया।

साल 2017–2020 के दौरान 47 लाख से ज्यादा गन्ना किसानों को 1,12,000 करोड़ रुपये का भुगतान किया गया है। पिछली सरकार ने 5 साल के कार्यकाल में 95,125 करोड़ रुपये का भुगतान किया था। पूर्ववर्ती सरकारों ने 21 चीनी मिलों को बेच दिया था। जबकि पिछले चार साल में गोरखपुर और बस्ती में 1999 से बंद पड़ी चीनी मिलें दोबारा चालू की गई। सरकार इस समय करीब 119 चीनी मिलें आपरेट कर रही है। प्रदेश सरकार ने 2018–19 से गन्ने का एसएपी नहीं बढ़ाया है। इसके पीछे खास बजह है कि, पहले किसानों से 18 हजार करोड़ का गन्ना खरीदा जाता था, वह अब बढ़कर 36 हजार करोड़ रुपये हो गया है। केंद्र सरकार की प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना के तहत अभी तक जारी छह किस्तों के तहत 2.35 करोड़ किसानों को 22594.78 करोड़ रुपये दिए गए हैं। इसके अलावा इस साल 2.16 करोड़ किसानों को 4333.40 करोड़ रुपये दिए जाएंगे।

मुख्यमंत्री की महत्वाकांक्षी योजनाओं में से एक, प्रदेश में एक्सप्रेस–वे का जाल बिछाना है। जब उन्होंने सत्ता

संभाली थी तब दिल्ली–आगरा यमुना एक्सप्रेस–वे और लखनऊ–आगरा एक्सप्रेस–वे राज्य की पहचान थे। लेकिन अब प्रदेश सरकार देश में एक्सप्रेस–वे का सबसे बड़ा जाल बिछा रही है। इसके तहत 340 किलोमीटर लंबे पूर्वांचल एक्सप्रेस–वे, 296 किलोमीटर लंबे बुंदेलखंड एक्सप्रेस–वे, 91 किलोमीटर लंबे गोरखपुर लिंक एक्सप्रेस–वे और 594 किलोमीटर लंबे गंगा एक्सप्रेस–वे प्रोजेक्ट पर काम चल रहा है। पूर्वांचल एक्सप्रेस का 70 फीसदी काम पूरा हो चुका है। यह प्रोजेक्ट मार्च तक पूरा हो जायेगा। सरकार की बेहतर भूमि अधिग्रहण नीति से एक्सप्रेस–वे समय पर पूरे हो रहे हैं। 22494.66 करोड़ रुपये की लागत से बन रहा पूर्वांचल एक्सप्रेस–वे गोरखपुर, प्रयागराज, बाराबंकी, अमेठी, सुल्तानपुर, अयोध्या, अंबेडकर नगर, आजमगढ़, मऊ और गाजीपुर शहरों को जोड़े रहा है। पूर्वांचल एक्सप्रेस–वे पर हवाई पट्टी भी बनाई जा रही है। यानी आपात स्थिति में इस एक्सप्रेस–वे पर लड़ाकू विमान उतारे जा सकेंगे। इससे पूर्वांचल विकास के प्रथ सोपान पर आ जायेगा।

296 किलोमीटर बुंदेलखंड एक्सप्रेस–वे का निर्माण कार्य जारी है और जनवरी 2022 तक इसको पूरा करने का लक्ष्य है। यह चित्रकूट, बांदा, महोबा, हमीरपुर, जालौन, औरैया, इटावा को जोड़ेगा। वहीं 594 किलोमीटर लंबा गंगा एक्सप्रेस–वे मेरठ, हापुड़, बुलंदशहर, अमरोहा, संभल, बंदायूं, शाहजहांपुर, हरदोई, उन्नाव, रायबरेली, प्रतापगढ़ और प्रयागराज से होकर गुजरेगा। इसके लिए जून 2021 तक 90 फीसदी भूमि अधिग्रहण का काम पूरा हो जाएगा।

सरकार के चार साल में नागरिकता संशोधन कानून के विरोध प्रदर्शन के दौरान सार्वजनिक संपत्तियों के हुए नुकसान को लेकर लाया गया अध्यादेश भी रहा है। मार्च 2020 में रिकवरी आफ डैमेज टू पब्लिक एंड प्राइवेट प्रापर्टी अध्यादेश को मंजूरी दी थी। इससे विरोध प्रदर्शनों, आंदोलनों, जुलूसों और धरने के दौरान सार्वजनिक और निजी संपत्तियों को क्षति पहुंचाने वाले लोगों से नुकसान की भरपाई की जाएगी। इसका लाभ ये हुआ कि प्रदेर्शनकारी अब तोड़फोड़ से बचने लगे हैं। मौजूदा किसान आंदोलन इसका सबसे बड़ा उदाहरण है।

विरोध प्रदर्शन और संपत्तियों के नुकसान को लेकर कुल 510 मुकदमे 7,304 व्यक्तियों के खिलाफ दर्ज किए गए। इनमें 4,578 अभियुक्तों के खिलाफ कार्रवाई करते हुए 312 लोगों को आरोप पत्र भेजा जा चुका है। लगभग 1.73 करोड़ रुपये की क्षतिग्रस्त राज्य की संपत्ति के बदले में दोषी व्यक्तियों से 23.36 लाख रुपये की वसूली की गई है।

2017 से महिलाओं के खिलाफ अपराध में गिरावट आई है। राष्ट्रीय अपराध रिकार्ड ब्यूरो की 2019 की रिपोर्ट कहती है कि प्रदेश में 2016 और 2017 में प्रति एक लाख महिलाओं पर बलात्कार की दर 4.6 और 4.0 थी, जो 2019 में घटकर 2.8 रह गई। बलात्कार के मामले में प्रदेश 36 राज्यों में 29वें स्थान पर था। सितंबर 2020 तक प्रदेश में ऐसे मामलों में 42.24 फीसदी की कमी आई है। महिलाओं के अपहरण के मामले में भी 2016 की तुलना में 39 फीसदी गिरावट है। अगर सभी तरह के अपराधों को देखा जाए तो उत्तर प्रदेश कई प्रमुख राज्यों से बेहतर है। 15 दिसंबर 2020 तक कुल 129 अपराधी मुठभेड़ में मारे गए और 2,782 घायल हुए। 25 हजार के इनामी 9157 अपराधी, 25 से 50 हजार के इनामी 773 अपराधी और 50 हजार से अधिक के 91 इनामी अपराधी यानी कुल 10,021 अपराधी जेल भेजे गए।

भाजपा सरकार के इन चार साल में एक भी दंगे नहीं हो पाये। यह बड़ी उपलब्धि है। अयोध्या शांत रही। अब अयोध्या एक बड़े धार्मिक पर्यटन केंद्र के रूप में विकसित होने जा रही हैं। अयोध्या सोलर सिटी भी बन रही है। इसे स्मार्ट सिटी बनाने का मास्टर प्लान भी तैयार है। बुनियादी ढांचों को आधुनिक बनाने के साथ–साथ राम जानकी पथ भी बनेगा। एयरपोर्ट का काम भी तेजी से पूरा किया जा रहा है।

इन चार साल में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के लिए कोविड–19 महामारी भी एक बड़ी चुनौती लेकर आई। करीब 24 करोड़ आबादी वाले प्रदेश (अमेरिका के बराबर आबादी) को लेकर विश्व बैंक और सभी स्वास्थ्य विशेषज्ञ चिंता जाहिर कर चुके थे कि राज्य के कमजोर स्वास्थ्य ढांचे को देखते हुए बड़े पैमाने पर संक्रमण फैलने का खतरा है। उसी समय राज्य को करीब 45 लाख प्रवासी मजदूरों के पलायन का भी सामना करना पड़ा। लेकिन आखिरकार, विश्व

स्वास्थ्य संगठन ने राज्य में संक्रमण को रोकने के लिए सरकार की प्रशंसा की। प्रवासी मजदूरों को बसों के जरिए राज्य में उनके घरों तक पहुंचाने और कोटा में पढ़ाई कर कर रहे बच्चों को वापस अपने घरों तक पहुंचाने में भी सरकार की सक्रियता दिखी।

कोविड–19 की चुनौती पर मुख्यमंत्री कहते हैं, हम पहले राज्य हैं जहां पर 3.27 करोड़ लोगों के टेस्ट हुए हैं। इसका मतलब है कि हर रोज 1.75 लाख टेस्ट किए गए। समय पर हस्तक्षेप और बेहतर प्रबंधन का परिणाम है कि प्रदेश में संक्रमण कम रहा। संक्रमण रोकने के लिए राज्य में वरिष्ठ अधिकारियों का ग्रुप–11 बनाया गया। हर जिले में इंटीग्रेटेड कोविड कमांड एंड कंट्रोल सेंटर बनाए गए। तीसरी अहम बात यह रही कि डाटा मैनेजमेंट पोर्टल से निगरानी की गई। इन प्रयासों से 15 फरवरी तक प्रदेश में केवल 6 लाख संक्रमित मामले आए। इनमें 8704 लोगों की मौत हुई। इतना ही नहीं प्रदेश में सर्विलांस टीम के माध्यम से 1,85,941 क्षेत्रों में 5,12,325 टीम के माध्यम से 3,14,98,795 घरों के 15,29,39,019 जनसंख्या का सर्वेक्षण किया गया। इसके अतिरिक्त 3000 से अधिक वैक्सीनेशन बूथ बनाये गये है जहां पर 60 वर्ष से अधिक आयु वर्ग के लोगों का वैक्सीनेशन हो रहा है।

कोविड–19 के दौर में 45 लाख प्रवासी श्रमिक राज्य में पहुंचे थे। ऐसे में उनके लिए नौकरी की व्यवस्था करना सबसे बड़ी चुनौती थी। श्रम आयोग के जरिए लोगों के कौशल की पहचान कर उन्हें नौकरी देने का काम शुरू किया गया। इस पहल से 27.28 लाख प्रवासी श्रमिकों को 11 लाख छोटी और बड़ी कंपनियों में नौकरी मिल गई। श्रमिकों को मनरेगा में भी रोजगार के अवसर मिले। उद्योग संगठनों के साथ भी समझौते किए गए। आठ लाख छोटी इकाइयों को चलाया गया, जिससे 51 लाख लोगों को नौकरी मिली। साथ ही आत्मनिर्भर उत्तर प्रदेश रोजगार योजना के तहत 4 लाख इकाइयों को 10,600 करोड़ रुपये का कर्ज दिया गया। यह अभियान 31 जिलों में लांच किया गया।

अकेले 'वन डिस्ट्रक्टि वन प्रोडक्ट' (ओडीओपी) स्कीम के जरिए 80 हजार करोड़ रुपये का निर्यात किया गया। इसी तरह इन्वेस्टर सम्मेनल के जरिए वैश्विक निवेश लाने और इंफ्रास्ट्रक्चर तैयार करने पर जोर है। सम्मेलन में 4.50 लाख करोड़ के निवेश प्रस्ताव आए। इनमें से 2.25 लाख करोड़ रुपये के प्रोजेक्ट शुरू हो चुके हैं।

बिजनेस के लिए सरकार ने 186 सुधार लागू किए। इन कदमों का ही परिणाम है कि ईज आफ डूइंग बिजनेस रैकिंग में राज्य पिछले तीन साल में 12 पायदान ऊपर आया है। डीपीआइआइटी की रैकिंग में प्रदेश दूसरे स्थान पर पहुंच गया है। इसी तरह, एकल खिड़की प्रणाली के तहत निवेश मित्र पोर्टल शुरू किया गया है, जिसके साथ 166 सेवाएं जोड़ी गई हैं। अभी तक 93 फीसदी आवेदन निपटाए जा चुके हैं। 2020–21 में औद्योगिक विकास प्राधिकरण ने करीब 740 एकड़ भूमि (1097 प्लाट) का आवंटन किया है। जिसके जरिए करीब 9700 करोड़ रुपये का निवेश आएगा और करीब 1,95,990 लोगों को रोजगार मिलेगा। जिन कंपनियों को प्लाट आवंटित किए गए हैं, उनमें हीरानंदानी, सूर्या ग्लोबल, हिंदुस्तान यूनीलीवर, एमजी कैप्सूल, केशो पैकेजिंग, माउंटेन व्यू टेक्नोलाजी हैं।

एयर कनेक्टिविटी के तहत छोटे शहरों को जोड़ने के अलावा जेवर एयरपोर्ट सरकार की अहम परियोजनाओं में से एक है। इसका पहला चरण 2024 में पूरा हो जाने की उम्मीद है। पूरी तरह तैयार हो जाने पर यह 6 रनवे के साथ काम करेगा। दूसरे चरण के भूमि अधिग्रहण के लिए 4000 करोड़ रुपये स्वीकृत किए हैं। सरकार ग्रेटर नोएडा में फिल्मसिटी का भी निर्माण कर रही है।

शिक्षा के क्षेत्र में 'आपरेशन कायाकल्प' के जरिए एक लाख स्कूलों को विकसित कर रही है। 16 फरवरी को उसने 'अभ्युदय स्कीम' लांचहुई, जिसके तहत छात्र मुफ्त में कोचिंग की सुविधा ले रहे हैं। छात्र आफलाइन क्लास और आनलाइन मैटेरियल प्राप्त कर सकेंगे। छात्रों को सिविल सर्विसेज, एनडीए, सीडीए, सैनिक स्कूल, नीट, जेईई परीक्षा की कोचिंग मिल सकेगी।

सरकार ने 'वन डिस्ट्रिक्ट वन प्रोडक्ट' स्कीम को जनवरी 2018 में लांच किया। इसका उद्देश्य प्रदेश के 75 जिलों में स्थानीय स्तर पर मौजूद कला, कारीगरी और कौशल का विकास करना है। हर जिले के लिए एक प्रोडक्ट का चयन किया गया है। कारीगारों को

वित्तीय सहायता से लेकर पैकेजिंग, कॉमन फैसिलिटी सेंटर, डिजाइनिंग और गुणवत्ता नियंत्रण की सुविधा सरकार के तरफ से दी जा रही है।

ओडीओपी योजना के तहत प्रत्येक कारीगर और इकाई को 20 लाख रुपये तक की वित्तीय सहायता दी जाती है। पिछले तीन साल में 80,000 कारीगरों को प्रशिक्षित किया गया है और 40 लाख लोगों को रोजगार के अवसर मिले हैं। कारीगारों के कौशल विकास के साथ उपकरण वितरण की सुविधा भी दी जा रही है। इसके लिए 10 दिन का मुफ्त कोर्स भी कराया जा रहा है।

कच्चा माल, पैकेजिंग, डिजाइनिंग आदि दूसरी जरूरतों को पूरा करने के लिए हर जिले में कामन फैसिलिटी सेंटर खोले जा रहे है। इसके तहत कुल खर्च की 90 फीसदी रकम (अधिकतम 13.5 करोड़ रुपये) सरकार वहन कर रही है। अब तक 22 कामन फैसिलिटी सेंटर के प्रस्ताव को मंजूरी दी जा चुकी है। इसमें से 15 सीएफसी तैयार होने के चरण में हैं। ओडीओपी के15 उत्पादों को जीआई टैग भी मिल गया है और 10 इसे पाने की प्रक्रिया में हैं।

मार्केटिंग के लिए सरकार ने 450 राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय प्रदर्शनी–मेला का चयन किया है, जहां पर कारीगार भाग ले सकेंगे। उनकी यात्रा, ठहरने और स्टॉल का खर्च सरकार देगी। इसके अलावा करीब 20 हजार उत्पाद प्रमुख ई–कॉमर्स कंपनियों के प्लेटफॉर्म से जोड़े गए हैं।

इसको मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की खास पहल माना गया है। पूरी दुनिया में क्लस्टर आधारित उद्योग काफी तेजी से विकसित हुए हैं। चीन, थाइलैंड, जापान उदाहरण है। उत्तर प्रदेश में 20 –25 ऐसे क्लस्टर हैं जो हजारों साल से स्थापित है। ऐसे में उन्हें बढ़ाकर न केवल रोजगार के अवसर पैदा किए जा सकते हैं बल्कि अर्थव्यवस्था को भी गति दी जा सकती है। अभी तक किसी भी सरकार ने इसे उनकी जरूरत को ध्यान में रखकर विकसित नहीं किया। जबकि इन क्लस्टर से लाखों लोग प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रुप से जुड़े हुए हैं। उपेक्षा की वजह से कई पारंपरिक उद्योग तो लुप्त होने के कगार पर पहुंच गए थे। इन्हें फिर से रिवाइव करने के लिए ही ओडीओपी को शुरू किया गया।

पुरानी योजना और इस योजना में सबसे बड़ा अंतर है कि कभी इन क्लस्टर की जरूरतों को समग्र रूप से देखा ही नहीं गया। पहले अगर हैंडीक्राफ्ट उद्योग को सहयोग देना होता है तो विभाग कारीगर को सहयोग देता था। उसे पेंशन मिल जाती थी, एक–दो प्रदर्शनी में स्टाल मिल जाता था। लेकिन ओडीओपी में उद्योग की हर जरूरतों पर जोर दे रहे हैं। सरकार पूरा साथ दे रही है। इसके तहत फाइनेंस, कौशल विकास, कच्चे माल की उपलब्धता, पैकेजिंग, मार्केटिंग पर योजना बनाई गई है।

आप बनारस की साड़ी को लीजिए पहले भी इस पर काम होते थे योजनाएं बनती थी लेकिन उसके हर पहलू को ध्यान में रखते हुए योजना बनाना उस पर सहयोग देना कभी नहीं हुआ। कच्चे माल को अभी तक चीन से रेशम मंगाते थे, अब हम दूसरे विकल्प उपलब्ध करा रहे हैं। इसके अलावा रेशम विभाग के जरिए उत्तर प्रदेश में रेशम उत्पादन के प्रयास किए जा रहे हैं। जिससे एक देश पर निर्भरता खत्म हो जाए। छोटे कारोबारियों को साड़ी का धागा खरीदने के लिए वर्किंग कैपिटल उपलब्ध कराई जा रहे है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने ऐसे कारीगरों के 10 समूह को एक करोड़ रुपए का सहयोग दिया है। बुनकरों को पैर के लूम और सोलर लूम भी उपलब्ध कराई जा रही है। इसके अलावा बनारस में दो 2 कामन फैसिलिटी सेंटर भी बन रहा है। जो डिजाइन में मदद करेगा। इंस्टीट्यूट आफ पैकेजिंग के साथ समझौता हुआ है। ऐसे ही सभी जिले के लिए डाइग्नोस्टिक रिपोर्ट तैयार करके डिस्ट्रिक्ट एक्शन प्लान बना है। 40 सलाहकारों को भी जोड़ा गया हैं।

मार्केटिंग के लिए सभी प्रमुख ई–कामर्स कंपनी के साथ समझौता किया गया है। फ्लिपकार्ट,अमेजन इबे जैसे कंपनियों के साथ डीलर्स को जोड़ रहे हैं इसमें सरकार सहयोग कर रही है। इसके अलावा ओडीओपी ने पोर्टल लांच किया है, जिसमें कारोबारियों को जोड़ा जा रहा है। जहां वेखुद अपने सामान की खरीद–बिक्री कर सकेंगे। अभी तक 15–20 हजार कारीगार, ई–कामर्स कंपनियों के साथ जुड़ गए हैं। लागत कम करने के लिए थोक आपूर्ति डिपो तैयार हो रहे हैं। जिससे कारोबारी सीधे कच्चे माल की खरीद कर सकेंगे।

12 मार्च से आजादी का अमृत महोत्सव

उत्तर प्रदेश भारत की आजादी की 75वीं वर्षगांठ के अवसर पर ''आजादी का अमृत महोत्सव'' को आरंभ कर रहा है। प्रदेशभर में इस दिन से आजादी के खास समारोहों को आयोजित किया जा रहा है। दांडी मार्च के संदर्भ को प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी गुजरात से आरंभ करेंगे। आजादी के अमृत महोत्सस से प्रदेश के स्वतंत्रता आंदोलन के प्रमुख केन्द्रो ंपर विशेष आयोजन होगें।

आजादी का अमृत महोत्सव कार्यक्रम उत्तर प्रदेश में 12 मार्च 2021 से प्रारम्भ होगा जो 75 सप्ताह तक चलेगा। इस आयोजन के लिए प्रदेश के 04 स्मारक स्थलों (बलिया, लखनऊ, मेरठ व झांसी) का चयन किया गया है। इस दिन 75 साइकिल सवार वालण्टियर्स द्वारा 7500 मीटर ''स्वतंत्रता की साइकिल रैली'' का आयोजन किया गया है। सभी साइकिलों में स्वतंत्रता आंदोलन के लोकप्रिय नारों के प्ले कार्ड लगाये तथा वालेण्टियर भारतीय परिधान में रहेंगे। साइकिल रैली प्रातः 9 बजे से प्रारम्भ होगी व 9:45 बजे चयनित स्थलों पर पहुंचेगी। कार्यक्रम में राष्ट्रभक्ति पर आधारित कविता पाठ, स्वतंत्रता संग्राम पर आधारित नुक्कड़ नाटक, नृत्य नाटिका का आयोजन किया जायेगा।

दांडी मार्च पर आधारित भोजपुरी, अवधी, बुंदेली, खड़ी बोली स्थानीय लोकगीत प्रस्तुत किये जाएंगे। सूचना विभाग उ0प्र0 एवं सूचना मंत्रालय भारत सरकार के प्रेस इन्फारमेशन ब्यूरो के सहयोग एवं उ0प्र0 राजकीय अभिलेखागार के समन्वय से अभिलेख प्रदर्शनी व दांडी मार्च की झांकी भी प्रदर्शित की जायेगी। 12 मार्च 2021 को 10:30 बजे दूरदर्शन द्वारा अमृत महोत्सव के राष्ट्रीय आयोजन स्थल दांडी गुजरात से देश के सभी 75 स्थानों को लिंक किया जायेगा। 10:35 बजे मुख्य अतिथि उद्बोधन होगा। 11:00 बजे प्रधानमंत्री जी का दांडी, गुजरात के अमृत महोत्सव का आयोजन स्थल पर आगमन एवं कार्यक्रम का शुभारम्भ किया जायेगा। कार्यक्रम में बेसिक शिक्षा एवं माध्यमिक शिक्षा के विद्यालय एवं उच्च शिक्षा के महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालयों में संगोष्ठीध्सेमिनार एवं निबन्ध प्रतियोगिता भी आयोजित की जायेगी।

25,000 मेगावाट हुई पारेषण क्षमता

चार साल में 10844.39 करोड़ रुपये की लागत से कुल 110 ट्रांसमिशन उपकेंद्रों का ऊर्जीकरण,1.30 लाख से अधिक मजरों में पहुंची रोशनी, 1.38 करोड़ घरों का दूर हुआ अंधेरा

उत्तर प्रदेश में 2017 में सरकार आने से पहले जहां कुल चार जिलों में बिजली दिखती थी आज योगी सरकार में गांव देहात खेत खलिहान तक बिजली चमक उठी है। गांवों में अब अंधेरा दूर हो चुका है। हर मजरे के हर घर के अंदर सीएफएल के बल्ल जल रहे है। गांवों के बच्चे अब लालटेन युग से निकलकर बल्ब की रोशनी में संगीत के सात सुरों को समझ रहे हैं। पढ़ रहे हैं। आगे बढ़ रहे हैं।

ऊर्जा एवं अतिरिक्त ऊर्जा स्रोत मंत्री श्री श्रीकांत शर्मा ने कहा कि 2017 में प्रदेश में सरकार बनते ही केंद्र के साथ 'पावर फॉर ऑल' का समझौता कर 'सबको बिजली पर्याप्त बिजली, निर्बाध बिजली' की दिशा में तेज गति से कार्य किये गये। चार साल में 10844.39 करोड़ रुपये की लागत से 765 केवी, 400 केवी, 220 केवी और 132 केवी क्षमता के कुल 110 ट्रांसमिशन उपकेंद्रों का ऊर्जीकरण किया गया। प्रदेश की पारेषण क्षमता भी बढ़कर 25,000 मेगावाट हो गयी है। इससे प्रदेश को निर्बाध एवं ट्रिपिंग फ्री बिजली मिल सकेगी। ऊर्जा मंत्री ने कहा कि 6,100 करोड़ रुपये की लागत से पारेषण परियोजनाओं का पीपीपी मोड पर कार्य किया जा रहा है और प्रदेश में 400 केवीए से उच्च प्रकृति के पारेषण कार्यों को भी पीपीपी मोड में संपादित करने के लिए कार्यवाही आगे बढ़ाई जा रही है। उन्होंने कहा कि प्रदेश की पारेषण क्षमता (टीसी) जो वर्ष 2016–17 में 16,348 मेगावाट थी। वर्ष 2019–20 में इसे 24,000 मेगावाट और 2020–21 में 25,000 मेगावाट तक बढ़ाया गया। वर्ष 2025 तक 198 पारेषण उपकेंद्रों के निर्माण से प्रदेश में 32,400 मेगावाट तक क्षमता हो जाएगी। उन्होंने कहा कि पारेषण तंत्र की विद्युत आयात क्षमता (टीटीसी) वर्ष 2016–17 में 7800 मेगावाट थी, वर्ष 2020–21 में आंतरिक उत्पादन 10400 मेगावाट के सापेक्ष 14,600 मेगावाट की जा रही है।

प्रदेश सरकार द्वारा विगत चार साल में 1.30 लाख से अधिक मजरों में विद्युतीकरण का कार्य हुआ है। 1.38 करोड़ उपभोक्ताओं को निःशुल्क विद्युत के कनेक्शन उपलब्ध कराए गए हैं। टोल फ्री नंबर 1912 जारी कर किसानों और उपभोक्ताओं की समस्याओं का निराकरण किया जा रहा है।

भारत में वैश्विक पैमाने पर होगा दूरसंचार विनिर्माण

इस योजना से 3 हजार करोड़ रुपये से ज्यादा का निवेश आकर्षित होगा और यह बड़े पैमाने पर प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रोजगार के अवसर पैदा करेगा

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में केंद्रीय मंत्रिमंडल की बैठक में 17 फरवरी को दूरसंचार और नेटवर्किंग उत्पादों के लिए उत्पादन से संबद्ध लाभ (पीएलआई) योजना को मंजूरी दी गई, जिसके लिए बजट में 12,195 करोड़ रुपये व्यय करने का प्रावधान किया गया है।

पीएलआई योजना का लक्ष्य भारत में दूरसंचार तथा नेटवर्किंग उत्पादों के निर्माण को बढ़ावा देना है। इसके साथ ही वित्तीय लाभ देने के प्रस्ताव से घरेलू विनिर्माण को बढ़ावा मिलेगा और दूरसंचार तथा नेटवर्किंग उत्पादों के क्षेत्र में निवेश आकर्षित किया जा सकेगा। इस तरह 'मेक इन इंडिया' को प्रोत्साहित करने में मदद मिलेगी। साथ ही, यह योजना दूरसंचार और नेटवर्किंग उत्पादों के निर्यात को प्रोत्साहित करेगी, जो 'मेड इन इंडिया' हैं।

इस योजना के तहत उन कंपनियोंध्उद्यमों को सहायता मुहैया कराई जाएगी, जो विशेष रूप से दूरसंचार और नेटवर्किंग उत्पादों का निर्माण करते हैं। पात्रता इस बात पर निर्भर करेगी कि चार वर्ष की अवधि में संचयी वृद्धिशील निवेश की न्यूनतम सीमा और आधार वर्ष 2019–2020 के आधार पर निर्मित उत्पादों की कुल बिक्री, करों के शुद्ध रूप में क्या रही। कुल संचयी निवेश एकमुश्त किया जा सकता है, बशर्ते वह चार साल की अवधि के लिए निर्धारित संचय सीमा को पूरा करता हो।

वैश्विक तौर पर दूरसंचार एवं नेटवर्किंग उत्पादों का निर्यात 100 बिलियन अमरीकी डॉलर का बाजार अवसर प्रदान करता है, भारत जिसका लाभ उठा सकता है। इस योजना के तहत सहायता से भारत वैश्विक कंपनियों से भारी निवेश आकर्षित कर सकता है और साथ ही साथ घरेलू श्रेष्ठ कंपनियों को इन उभरते अवसरों का लाभ उठाने के लिए प्रेरित कर वैश्विक निर्यात बाजार में अपनी महत्वपूर्ण उपस्थिति दर्ज कर सकता है।

'आत्मनिर्भर भारत' के तहत विनिर्माण और निर्यात क्षमता में वृद्धि करने की रणनीतियों के अंग रूप में यह योजना उस महत्वपूर्ण योजना का हिस्सा है, जिसे केंद्रीय मंत्रिमंडल ने विभिन्न मंत्रालयोंधविभागों खासतौर से दूरसंचार विभाग में पीएलआई लागू करने के उद्देश्य से नवंबर, 2020 में मंजूरी दी थी।

इसके तहत आधार वर्ष से पांच वर्ष की अवधि के लिए एमएसएमई के लिए 7 प्रतिशत से 4 प्रतिशत तक लाभों के साथ न्यूनतम 10 करोड़ रुपये के निवेश और अन्य के लिए 6 प्रतिशत से 4 प्रतिशत तक के लाभों के साथ 100 करोड़ रुपये के निवेश का प्रस्ताव है। एमएसएमई और गैर–एमएसएमई श्रेणियों में उच्च निवेश वाले आवेदकों का चयन पारदर्शी प्रक्रिया के जरिए किया जाएगा।

इस योजना के साथ भारत दूरसंचार और नेटवर्किंग उत्पादों के विनिर्माण के क्षेत्र में वैश्विक केंद्र के रूप में स्थापित हो सकेगा। उम्मीद है कि पांच वर्ष में इसका वृद्धिशील उत्पाद 2 लाख करोड़ रुपये के लगभग हो जाएगा। भारत विनिर्माण के क्षेत्र में अपनी प्रतिस्पर्धा में सुधार कर सकेगा।

उम्मीद है कि इस योजना से 3 हजार करोड़ रुपये से ज्यादा का निवेश आकर्षित होगा और यह बड़े पैमाने पर प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रोजगार के अवसर पैदा करेगा। इस नीति के जरिए भारत आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ेगा। भारत में बड़े पैमाने पर विनिर्माण के लिए लाभ दिए जाने से घरेलू स्तर पर धीरे–धीरे मूल्य संवर्धन बढ़ेगा। एमएसएमई को अधिक लाभ देने के प्रावधान से घरेलू दूरसंचार विनिर्माताओं को वैश्विक आपूर्ति शृंखला का हिस्सा बनने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकेगा।

———————————————

केन्द्र सरकार ने इस वर्ष खाद्य सब्सिडी के लिए जारी किए रिकॉर्ड 1,25,217.62 करोड़ रूपये

केन्द्र सरकार ने इस वर्ष खाद्य सब्सिडी के लिए रिकॉर्ड 1,25,217.62 करोड़ रूप्ये जारी किये हैं। इसी वित्तीय वर्ष के दौरान 2,97,196.52 करोड़ रूपये से अधिक राशि और जारी की जाएगी, जिसमें से पंजाब के लिए सार्वजनिक वित्तीय प्रबंधन प्रणाली के तहत 1,16,653.96 करोड़ रूपये की राशि स्वीकृत है। इससे हरियाणा के किसानों को लागभग 24,841. 56 करोड़ रूपये का लाभ होगा। भगतान का ई–मोड यह दर्शाता है कि किसान, आढ़तियों, मंडी सहित सभी प्रतिभागी पारदर्शिता सुनिश्चित करने के लिए अपने भुगतान सीधे श्रृंखला में ऑनलाइन प्राप्त करेंगे। इससे किए गए भुगतानों को आसानी से ट्रैक किया जा सकता है और इससे सभी लाभान्वित होते हैं।

केंद्र ने अक्टूबर, 2020 से राज्यों को जारी किए जीएसटी मुआवजे के एक लाख करोड़ रुपये

अभी तक राज्यों और विधानसभा वाले केंन्द्रशासित प्रदेशों को कुल अनुमानित जीएसटी मुआवजे की कमी की 91 प्रतिशत राशि जारी की जा चुकी है

केंद्रीय वित्त मंत्रालय ने 20 फरवरी को कहा कि केंद्र ने अक्टूबर, 2020 से अब तक राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों को जीएसटी मुआवजे के रूप में एक लाख करोड़ रुपये जारी किए। मंत्रालय ने 19 फरवरी को 23 राज्यों और तीन केंद्रशासित प्रदेशों (दिल्ली, जम्मू–कश्मीर और पुदुचेरी) को 5,000 करोड़ रुपये की 17वीं साप्ताहिक किस्त जारी की, जिसके साथ पिछले साल अक्टूबर में स्थापित विशेष उधारी खिड़की के तहत अब तक जारी की गई कुल राशि एक लाख करोड़ रुपये हो गई।

अभी तक राज्यों और विधानसभा वाले केंन्द्रशासित प्रदेशों को कुल अनुमानित जीएसटी मुआवजे की कमी की 91 प्रतिशत राशि जारी की जा चुकी है। इसमें से 91,460.34 करोड़ रुपये की राशि राज्यों को और विधानसभा वाले तीन केंद्रशासित प्रदेशों को 8,539.66 करोड़ रुपये की राशि जारी की गई है।

भारत सरकार ने जीएसटी कार्यान्वयन के कारण पैदा हुई 1.10 लाख करोड़ रुपये की कमी को पूरा करने के लिए अक्टूबर, 2020 में एक विशेष उधार विंडो स्थापित की थी। राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों की ओर से भारत सरकार द्वारा इस विंडो के माध्यम से ऋण लिया जा रहा है।

विशेष विंडो के तहत भारत सरकार 3 साल और 5 साल के कार्यकाल के लिए सरकारी स्टॉक में उधार ले रही है। प्रत्येक टेनर के तहत किए गए उधार को जीएसटी क्षतिपूर्ति की कमी के अनुसार सभी राज्यों में समान रूप से विभाजित किया गया है।

वर्तमान जारी राशि के साथ 16 राज्यों और 2 केंद्रशासित प्रदेशों के लिए 5 साल के लिए लंबित जीएसटी अनुपात समाप्त हो गया है। ये राज्यध्केंद्रशासित प्रदेश को पहली किस्त से जीएसटी क्षतिपूर्ति जारी की जा रही थी।

अभी तक केंद्र सरकार द्वारा इस विशेष उधार विंडो के माध्यम से 4.8307 प्रतिशत की औसत ब्याज दर पर 1,00,000 करोड़ रुपये की राशि उधार ली गई है।

ईपीएफओ ने चालू वित्त वर्ष की पहली तीन तिमाहियों में लगभग 53.70 लाख नए सदस्य जोड़े

विड–19 महामारी होने के बावजूद ईपीएफओ ने चालू वित्त वर्ष की पहली तीन तिमाहियों में लगभग 53.70 लाख नए सदस्य जोड़े हैं। चालू वित्त वर्ष की दूसरी तिमाही की तुलना में तीसरी तिमाही के दौरान शुद्ध वेतन वृद्धि के मामले में 22: की मजबूत वृद्धि दर्ज की है। ईपीएफओ ने 20 फरवरी, 2021 को अनंतिम पेरोल आंकड़े जारी किए। इसके अंतर्गत दिसंबर, 2020 के माह में ईपीएफओ के साथ 12.54 लाख नए सदस्य जुड़ गए हैं। नवंबर, 2020 की तुलना इस महीने के नेट सब्सक्राइबर्स में 44: की वृद्धि हुई है। पेरोल डेटा की साल दर साल तुलना करे तो दिसंबर, 2020 में 24: की वृद्धि हुई है, जो ग्राहकों के संदर्भ में ईपीएफओ के लिए कोविड से पहले की स्थिति की वापसी प्रदर्शित करता है। दिसंबर, 2020 माह में लगभग 8.04 लाख नए सदस्य ईपीएफओ में शामिल हुए। लगभग 4.5 लाख कुल सदस्य बाहर निकल गए और फिर ईपीएफओ से जुड़ गए, जो ईपीएफओ द्वारा कवर किए गए प्रतिष्ठानों के अंदर सदस्यों द्वारा नौकरियों की अदला–बदली का संकेत देते हैं और सदस्यों द्वारा अंतिम निपटारा का विकल्प चुनने के बजाय फंड के हस्तांतरण के माध्यम से अपनी सदस्यता बरकरार रखने की पुष्टि करते हैं।

दिसंबर, 2020 माह में सबसे ज्यादा जुड़ने वाले नए सदस्य 22–25 वर्ष के हैं जिसकी संख्या 3.36 लाख है। उसके बाद 18–21 वर्ष के लोग हैं जिनकी संख्या 2.81 लाख है। 18–25 आयु वर्ग के सदस्यों को श्रम बाजार में नए रोजगार के रूप में देखा जा सकता है और दिसंबर, 2020 में इन नए सदस्यों द्वारा लगभग 49.19: प्रतिशत का योगदान दिया गया है। दिसंबर, 2020 के महीने में कुल 8.04 लाख शुद्ध ग्राहक ईपीएफ योजना में शामिल हुए जिसमें कुल 1.83 लाख महिलाएं थीं। नौकरी को लेकर महिलाओं की संख्या में सुधार इस महीने में जारी है क्योंकि नवंबर, 2020 में यह आंकड़ा 1.52 लाख था।

चार साल में चार लाख रोजगार

रोजगार एक कुशल एवं प्रभावी नेतृत्व का सशक्त आधार माना जाता है। इस दृष्टि से उत्तर प्रदेश सरकार सबसे प्रभावी रही है। रोजगार को लेकर योगी सरकार का निरंतर ध्यान देना अकारण नहीं रहा है। आंकड़े बोलते हैं कि, 2017 से पूर्व के चार वर्षों में व्यावसायिक शिक्षा व कौशल विकास विभाग ने 3.71 लाख युवाओं को ट्रेनिंग दी थी लेकिन जब हम वर्तमान सरकार से तुलना करते हैं तो प्रशिक्षण पाने वालों का आंकड़ा सात लाख हो जाता है। ऐसी उपलब्धियां ही योगी आदित्यनाथ सरकार के शासन को अनूठा एवं प्रभावी बना रही हैं। इसलिये 10 लाख युवाओं को ट्रेनिंग का लक्ष्य बेशक असंभव नहीं। लाकडाउन में घर लौटे 38 लाख प्रवासियों के कौशल को प्रमाणित करके सरकार अपनी क्षमता का दिख चुकी है। ताजा लक्ष्य मजबूत इंफ्रांस्टक्चर पर टिका है। इसकी बुनियाद राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान बनेंगे।

उत्तर प्रदेश सरकार ने न्यायालयों की आपाधपी के बीच चार साल में चार लाख युवाओं को नौकरी और रोजगार देने के मामले में रिकार्ड बनाया है। इससे यूपी सबसे ज्यादा नौकरी और रोजगार देने वाला राज्य बना है। सरकार का लक्ष्य इस वित्तीय वर्ष की समाप्ति तक 50 लाख प्रशिक्षित युवाओं को रोजगार के अवसर उपलब्ध कराना है जिसकी ओर सरकार अपने पग बढ़ा चुकी है। 16 अक्टूबर 2020 को 31,227 और 5 दिसंबर 2020 को 36,590 परिषदीय प्राथमिक विद्यालयों में नवनियुक्त सहायक अध्यापकों को आनलाइन प्रक्रिया के माध्यम से नियुक्ति पत्र वितरित किए गये थे। इसके अलावा 23 अक्टूबर 2020 को माध्यमिक शिक्षा विभाग के अन्तर्गत राजकीय माध्यमिक विद्यालयों के 3,317 नवचयनित सहायक अध्यापकों को पदस्थापन और नियुक्ति पत्र मिले।

2020 दिसंबर में सिंचाई एवं जल संसाधन विभाग के 3,209 नलकूप चालकों को नियुक्ति पत्र सौंपे गये। 34 हजार के करीब सरकारी नलकूपों पर नलकूप चालक नहीं थे। चिकित्सा एवं स्वास्थय परिवार कल्याण विभाग में 8556 और राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के तहत 28622 युवाओं को सरकार ने नौकरी दी है। प्राविधिक एवं व्यवसायिक शिक्षा में 365 एवं उत्तर प्रदेश अधीनस्थ सेवा चयन आयोग द्वारा 16708 को नियुक्ति पत्र मिला है। बेसिक शिक्षा विभाग में 54706 और पुलिस विभाग में 137253 युवाओ को नौकरी दी गई। सहकारिता विभाग में 726 और पब्लिक सर्वित कमीशन में 26103 युवाओं को तथा चिकित्सा शिक्षा में 1112 युवाओं को रोजगार दिया गया है। माध्यमिक शिक्षा विभाग में 14000 को एवं वित्त में 614 को रोजगार मिला है जबकि उच्च शिक्षा में 4615 एवं नगर विकास में 700 को नियुक्ति पत्र दिया गया है। इसके अतिरिक्त बेसिक शिक्षा में 69000 एवं पुलिस विभाग में 16629 लोगों की प्रक्रिया समाप्त हो रही है। हाल ही में सिंचाई विभाग में 3209 नलकूप चालकों को एवं 700 पब्लिक सर्विम कमीशन में लोगों को नियुक्तिपत्र मिला है। इस तरह से योगी सरकार में 381907 लोगों का प्रत्यक्ष रोजगार दिया गया है। इसके अलावा 19000 को राजगार देने की प्रक्रिया अंतिम चरण में हैं।

यूपी में बेसिक शिक्षा परिषद में सहायक अध्यापक पदों में भर्ती के लिए प्रयासरत लोगों के लिए बड़ी खुशखुबरी है कि सरकार 2021 में पचास हजार सहायक अध्यापकों की भर्ती करने जा रही है। इसकी प्रक्रिया भी शुरू है।

इस वर्ष सरकार की ओर से एक इंटर्नशिप स्कीम शुरू की जा रही है, जिसमेंयुवाओं को उनकी शिक्षा के मुताबिक विभिन्न संस्थाओं और उद्योगों से जोड़ा जाएगा। छह महीने या र साल भर की इंटर्नशिप करने वाले हर युवा को मानदेय के तौर 2500 रुपये दिया जाएगा। इसमें से 1500 रुपये केंद्र सरकार और 1000 रुपये प्रदेश सरकार वहन करेगी। इंटर्नशिप पूरी होने के बाद युवाओं के प्लेसमेंट का इंतजाम भी सरकार की ओर से किया जाएगा। सरकार 10वीं, 12वीं और ग्रेजुएशन करने वाले युवाओं को विभिन्न तकनीकी संस्थानों और उद्योगों से जोड़ने की योजना बना रही है।

सरकार प्रदेश में होने वाली पुलिस की भर्ती में 20 फीसदी बालिकाओं को अनिवार्य रूप से भर्ती करेगी जिससे प्रदेश की सुरक्षा में उनका योगदान बढ़ सके। इस तरह से 2017 में प्रदेश में भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनने के बाद कौशल मिशन के कार्यक्रम को तेज किया गया।

दीनदयाल उपाध्याय स्मृति उपवन

काशी क्षेत्र एवं जनप्रतिनिधि बैठक

कानपुर बुन्देलखण्ड कार्यसमिति बैठक

पत्रिका पंजीकरण – RNI-51899/91 डाक पंजीकरण – SSP/LW/NP-117-2018-20
मार्च प्रथम 2021 – प्रेषित डाकघर – R.M.S. चारबाग, लखनऊ – प्रेषण तिथि : 11–13 (प्रथम पाक्षिक)

बुन्देलखण्ड में बण्डई बांध परियोजना का लोकार्पण एवं विभिन्न योजनाओं का शिलान्यास

भारतीय जनता पार्टी के लिए मुद्रक तथा प्रकाशक प्रो. श्यामनन्दन सिंह द्वारा नूतन ऑफसेट मुद्रण केन्द्र, संस्कृति भवन, राजेन्द्र नगर, लखनऊ से मुद्रित व भाजपा कार्यालय, 7, विधानसभा मार्ग, लखनऊ से प्रकाशित। सम्पादक : अरूण कान्त त्रिपाठी